अध्याय दो

हिन्दी की प्रमुख दलित कहानियाँ एवं स्त्री पात्र

कहानी साहित्य की ऐसी विधा है जो लेखन व प्रकाशन से पूर्व अनादि काल से ही मानवीय जीवन की घटनाओं व कल्पनाओं की अभिव्यक्ति व्यक्तित्व समाज के मनोरंजन तथा मार्गदर्शन हेतु सुनी व सुनायी जाती रही हैं। वर्तमान में भी मानव जीवन में इसके महत्व व आवश्यकता में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं हुई इसलिए यह साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है जो समाज के प्रतिबिम्ब को सभी के समक्ष प्रस्तुत करती है। आज के दौर में कहानियों को विशेष संदर्भों में संदर्भित किया जाने लगा है। इनमें दलित विमर्श, आदिवासी विमर्ष, किन्नर विमर्श, प्रवासी साहित्य, किसान विमर्श, स्त्री विमर्श आदि प्रमुख हैं। दलित विमर्श के अन्तर्गत दलित जीवन से जुड़ी समस्याओं व संघर्षों का चित्रण साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इन विधाओं में दलित कहानी अत्यंत महत्वपूर्ण विधा है। इसके माध्यम से रचनाकार दलितों की पीड़ा, शोषण, अत्याचार, लाचारी, भय, कुण्ठा, निराशा, अवसाद आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। कहानीकार अपनी कहानियों में जीवन के विविध प्रसंगों, घटनाओं तथा पक्षों को पाठकों के सामने रखने की कोशिश करते है। दलित कहानीकारों की कहानियाँ दलित जीवन की पीड़ा, वेदना तथा जीवन संघर्षों का दस्तावेज हैं। उन्होंने निराधार दलितों के प्रति सवर्णों के आचार-विचार तथा उनके व्यवहार के कारण शोषित, पीड़ित एवं असहाय दलितों को तथा उनके विद्रोह को अनिवार्य विषय बनाकर अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है, तथा दलित साहित्य में स्त्री को भी उनकी समस्याओं और पीड़ाओं को दिखाकर आदर्शवादी ढंग से निरूपित की है।

प्रस्तुत अध्याय में आधुनिक दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियों में, सामाजिक परिवेश में स्त्री पात्रों की सशक्त छवि पेश करता है, ज़्यादातर कहानियों में महिलाओं के जीवन में हो

रहे परिवर्तन समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। स्त्री अस्मिता, स्त्री स्वत्व, जीवन संघर्ष, प्रतिरोध, स्त्री जागरण आदि को केन्द्रित कर स्त्री द्वन्दों के अन्तर्गत की छवियों का चित्र सचित्र किये गये हैं।

2.1 'जंगल की रानी' - कमली

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की **'जंगल की रानी'** कहानी एक दलित महिला की अपने सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा करने की निर्भीकता और साहस को उजागर करती है। इस कहानी की नायिका कमली एक आदिवासी युवती है, जो स्वाभिमान की रक्षा के लिए आखिरी सांस तक संघर्ष करती है और अंततः लड़ते-लड़ते अपनी जान दे देती है। लेकिन झुकती नहीं है। कमली अजेय थी। कड़ी मेहनत और समर्पण और अपने प्रधानाध्यापक के सहयोग से कमली ने मैट्रिक पास किया। वह पढ़ाई में होशियार थी।

गांव में एक डिप्टी साहब प्राइमरी स्कूल का निरीक्षण करने आए थे। उन्हें स्कूल का निरीक्षण करने में कम और स्कूल की अध्यापिका कमली की खूबसूरती में ज्यादा दिलचस्पी थी। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कमली को अपने साथ व्यस्त रखा। वे कमली के आंतरिक और बाह्य सौंदर्य पर मोहित थे। उनका मोह किसी भी कीमत पर कमली को पाने पर केंद्रित था। इसलिए उन्होंने कमली को फंसाने के लिए एक जाल बिछाया और उसे ग्रामीण 'महिला प्रशिक्षण शिविर' के लिए शहर भेज दिया। उन्होंने महिला शिविर के उद्घाटन के समय मौजूद शहर के एसपी और विधायक को भी अपनी साजिश में शामिल कर लिया। वे रेस्ट हाउस में मौजूद कमली का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। कमली को कुछ लोग पकड़कर लाए थे, जिन्होंने उसे बुरी तरह से बांध रखा था और उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया था। कमरे में लाते ही उन्होंने उसे खोल दिया और तीनों ने उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की। कानून के रखवाले और कमली के बीच वासना के युद्ध में कमली अपनी पहचान बचाने में सफल रही क्योंकि उसका व्यक्तित्व मजबूत और आक्रामक था,

लेकिन वह अपनी जान बचाने में सफल नहीं हो सकी। कमली अपना मान-सम्मान अपनी जान से भी बढ़कर समझती है। समाज में ऊँचे पदों पर बैठे लोग महिलाओं को भोग की वस्तु के रूप में देखते हैं। चाहे महिला आदिवासी हो या दलित, उसे इंसान तक नहीं समझा जाते थे। लेकिन कमली आखिरी सांस तक संघर्ष करती रही। वह किसी को भी अपने पास नहीं आने देती थी। अंत में वह लड़ाई में मर जाती है। कमली एक साहसी और विद्रोही महिला का प्रतीक है। कमली के रूप में दलित वर्ग की महिलाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है तथा उनके प्रति सरकार और प्रशासन की नीयत का भी यथार्थ चित्रण किया गया है।

2.2 'कजली' - कजली, कजली की माँ

प्रह्लाद चन्द दास की **'कजली'** कहानी में अस्तित्व और पहचान के संघर्ष, दर्द और संत्रास, सम्मान और अपमान, घर के अंदर और बाहर की आंतरिक उथल-पुथल और आकांक्षाओं को प्रस्तुत किया गया है। नायिका कजली का जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उसके पिता के निधन के बाद उसकी मां ने उनकी शादी कर दी। यदि कोई युवा लड़की अविवाहित होकर घर पर रहती है तो इसे एक अपशकुन माना जाता था। माँ की बीमारी की खबर सुनकर कजली अपना ससुराल छोड़कर माँ के पास आ जाती है। इससे ससुराल वाले खुश नहीं रहे और उसकी शादी टूट जाती है। यहीं से शुरू होती है कजली की कहानी। यहीं से उसकी सारी मुश्किलें भी शुरू होती हैं। कजली के जीवन में बार-बार शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न, यौन शोषण आदि का शिकार रही हैं। माँ की मृत्यु के बाद वह अकेली रह गई। उनकी मां और पिता पूरन पंडित के लिए काम करते थे, इसलिए पूरन पंडित उन्हें अपनी मां का काम सौंप देते हैं। वहीं, पूरन पंडित धीरे-धीरे उसके साथ दुष्कर्म करता है और उसे अपने प्रभाव में रखता है। बूढ़े पंडित के अलावा उसका बेटा छोटेलाल भी उसे बदनाम करता है। आख़िरकार कजली चाचा का बेटा छतर के साथ रहती है। जब छतर की बेटी सीता भी छोटेलाल के जाल में फंस जाती है तो काजली निडर होकर उसकी रक्षा करती

है। सीता की शादी कराने के साथ-साथ वह गांव की उन सभी लड़कियों के लिए काम और रहने की व्यवस्था भी करती है जो भाग गई हैं या ससुराल छोड़ गई हैं। कजली अपने साथ जिस तरह का रेप हुआ वो दूसरी लड़कियों के साथ नहीं होने देती। वह उन लड़कियों के लिए अपनी जान दे देती है जिनका कोई अपना नहीं होता। कजली अमीर लोगों द्वारा प्रताड़ित दलित महिलाओं का प्रतीक बन जाती है। यह कहानी न्याय के प्रति एक मार्मिक एवं करुणामय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

2.3 यात्रा - मुरिया

मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'यात्रा' में दलित आदिवासी स्त्री के अस्तित्व के प्रश्न को मार्मिकता के साथ उठाया गया है। यह एक दलित स्त्री के मुरिया से मारिया और फिर मारिया से मोनिका बनने की कहानी है। इस कहानी में धर्मांतरण की विवशता और चालाकी दोनों को दिखाया गया है। कहानी की नायिका मुरिया है जो जंगल में पैदा हुई थी। इस कहानी में उसे तीन नाम लेने हैं, मुरिया, मारिया, मोनिका। यहां इंसानों को नाम के आधार पर भी भेदभाव का सामना करना पड़ता है। जंगल में मुरिया मारिया बन गई, फिर शहर आकर उसे जीवन भर के लिए मोनिका नाम को अपनाना पड़ा। वह केवल बारह वर्ष की थी कि उस समय शहर से आए महेश ने उसे बातों में फंसाया और जंगल के सन्नाटे में उसके साथ बलात्कार किया। उसी दिन, वह घबराई हुई चर्च जाती है। वहीं से चर्च के पिता भी उसके साथ गलत काम करता यहां हर कोई दलित होने की मजबूरी का फायदा उठा रहा है। इधर मुरिया को नहीं पता था कि गुड टच और बैड टच क्या होता है। उसके पास सब कुछ बताने वाली मां नहीं थी। जब वह घर आई तो उसके पिता को सारी बात समझ में आ गई। लेकिन पिता कुछ नहीं कर सकते थे। उसके पिता ने उसकी शादी दूसरे गाँव के एक परिचित लड़के चुगन से करने का फैसला किया। मुरिया और छुगन शिक्षित थे। दोनों जंगल छोड़कर शहर आ जाते हैं और फिर काम की तलाश में फंस जाते हैं। काम की तलाश में उसे बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा और मुरिया को अपना नाम बदलकर

मोनिका रखना पड़ा, और शहरी जीवन अपनाना पड़ा। शहर में रहने वाले लोग दलितों को अछूत समझते हैं। नाम बदलने के साथ मुरिया भी शहरवासी बन जाती है। अत्यंत असहायता में भी, मुरिया लड़ना बंद नहीं करता। उच्च जाति का समुदाय दलित महिला के शरीर का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए करता है। दलित महिला के शरीर का गलत इस्तेमाल किया जाता है। यहां मुरिया अपने खिलाफ हो रहे अत्याचारों के खिलाफ कुछ नहीं कर पाती। उसे अत्याचार सहना पड़ता है। मुरिया मोनिका बनकर एक नया जीवन अपनाती है।

2.4 इज्ज़त - उषा

अजय नावरिया की कहानी 'इज्जत' कहानी में जाति के आधार पर शोषण और लिंग के आधार पर उत्पीड़न और सवर्ण समाज की सोच और महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच को वास्तविक रूप में दर्शाती है। दलित स्त्रियाँ उच्च जातियों के लिए भोग की वस्तु हैं। वे सदियों से उस पर अत्याचार करते आ रहे हैं। यह कहानी सामूहिक बलात्कार के बाद समाज के नजरिये और सब कुछ खोकर खड़ी हुई एक लड़की की कहानी है।

इस कहानी की नायिका उषा बुध्दिमति, स्वाभिमानी, साहसी, व्यावहारिक और जवान युवती है। उषा न केवल सवर्ण पुरुष द्वारा प्रताड़ित है बल्कि उसका पति भी उसे मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। इसीलिए वह अपने कार्यस्थल पर होने वाली समस्याओं के बारे में पति को नहीं बता पाती थी। उषा के साथ काम करने वाला जयदेव, उषा की शारीरिक सुंदरता से प्यार करने वाला सुखबीर और उसकी सहेली राधा का पति बदन सिंह, तीनों मिलकर उसके साथ बलात्कार करते हैं और उनमें से एक कहते है- “तू बिल्कुल मत डर बदन, कहेगी तो अपनी इज्ज़त खोयेगी। अभी तो हम तीन जानते है, बाद में सारा जमाना जान जायेगा”।[1]

परंतु उषा ऊंची जाति के लोगों द्वारा बलात्कार किये जाने पर घुटने नहीं टेकती। वह अपनी धोती से मूँह पोछकर अपने आप सोचती है कि- "इससे भला मेरी इज्जत कैसे चली गयी। इन नामदरों ने ज़रा भीतर तक मुझे ज़बरदस्ती छू लिया तो मेरी इज्ज़त इसमें कैसी चली गयी? इनकी इज्जत इनमें नहीं गयी?"।[2] वह पुलिस में मामला दर्ज कराया और अपने साथ हुए अत्याचारों के बारे में इंदिरा गांधी को पत्र भी लिखा और दोषियों को सजा दिलाने की हिम्मत की। समाज और परिवार में बदनामी के डर से वह आततताइयों को खुला नहीं छोड़ सकती, ताकि वे दोबारा दूसरों के साथ ऐसा न कर सकें।

2.5 सुमंगली - सुगिया

कावेरी जी की **'सुमंगली'** कहानी में समकालीन समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त कुरूपता और शोषण की कहानी है जिसमें स्त्रियों को उपभोग की वस्तु समझा जाता है। सुगिया एक छोटी बच्ची है जिसका इस दुनिया में अपना कहने वाला कोई नहीं है। सुगिया को अपने अतीत की जानकारी नहीं थी। जब से सुगिया को होश आया है, जब वह आठ-नौ साल की थी, तब से वह अपने को ठेकेदार की रखैल समझती थी। उसे याद नहीं कि उसे ठेकेदार के हवाले किसने किया था। वह भी बड़ी-बड़ी इमारतों पर दूसरे मजदूरों के साथ मजदूरी करती थी। जब सुगिया बारह वर्ष की हुई तो वह ठेकेदार की हवस का शिकार बन गयी। सुगिया अपने ही समूह के बीच बेखबर सो रही थी। उस वहशी, क्रूर, भूखे भेड़िये के ठेकेदार ने अपनी मनमर्जी करके चला गया। बेचारी मजदूर सुगिया उसके सामने चीखती-चिल्लाती रही, भगवान से प्रार्थना करती रही, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर में वह बेहोश हो गई। जब वह जागी, तो उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत उसकी सेवा कर रही है। वह बूढ़ी औरत दुखना की मां थी, जो उसके साथ काम करती थी। दुखना की मां उसे सांत्वना देते हुए कहती है कि - "चुप रह बेटी ! चुप रह यह तो एक न एक दिन होना ही था पर तू बडी ही अभागिन है री । जो इस छोटी सी उम्र में ही सब कुछ झेलना पडा अब एकदम चुप हो वरना पिचास को यदि मालुम हो गया तो तेरी चमडी उधडकर रख देगा। हॉ,

हम गरीबों का जन्म ही इसीलिए हुआ है । हमारी मेहनत से अटटलिकाएँ तैयार होती है और उसके पुरस्कार के बदले में हमारे शरीर का रौंद जाता है"।[3] कोई भी ठेकेदार के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत नहीं करता। अगर सुगिया काम छोड़ देती या अत्याचारों का विरोध करती तो उसे भूख से मरना पड़ता। और इसी मजबूरी का फायदा उठाकर ठेकेदार सुगिया का शोषण करता है। ठेकेदार किसी भेड़िये से कम नहीं था। उसने सुगिया को चौदह साल की उम्र में ही मां बना दिया। जब बच्चा पैदा हुआ तो बदनामी के डर से ठेकेदार ने मजदूर दुखना को डांटा और उसकी शादी सुगिया से करवा दी। दुखना का संतुलन बिगड़ गया और वह चार मंजिला इमारत से गिर गया, जहाँ उसकी मौत हो गई। जब उनका बेटा सुखदेव तेज बुखार से बीमार पड़ा तो उसने सभी से पैसे मांगने की कोशिश की लेकिन उसे पैसे नहीं मिले। आख़िरकार ठेकेदार की याद आई और पैसे मांगने चला गया। लेकिन ठेकेदार ने मुँह सिकोड़कर कहा- "आ पहले इधर तो आ मेरी बुलबुल! मुझे विश्वास था कि तुम खुद एक दिन मेरे पास आओगी। मुझे बुलाना नहीं पड़ेगा"।[4] एक माँ अपने बेटे के इलाज के लिए पैसे मांग रही है और हवस का पुजारी ठेकेदार उसकी इज्जत से खेलना चाहता है और इसलिए वह बीमार बच्चे को उसकी गोद से छीन लेता है और सुगिया को प्रताड़ित करता है। बेचारी सुगिया गिड़गिड़ाते हुए कहती है- "बाबु ऐसा जूल्म मत करो।" आखिर तुम्हारा ही तो बेटा है। पहले इसकी जान देखो"।[5] लेकिन उस हवस के पुजारीने मदद करना तो दूर की बात उल्टा उसे कहता है- "हू है मेरा बेटा ! छिनाल ! फिर कभी ऐसी बात मुँह से निकाली तो गला घोंट दुंगा, समझी तु सौ मर्द के पास रहकर मुझे बदनाम करती है खबरदार जो दुनिया की गन्दगी मेरे मुंह पर फेंकने की कोशिश की"।[6] ठेकेदार उसकी मदद नहीं करता बल्कि सिर्फ शारीरिक उत्पीड़न करता है। बाद में वह एक निजी डिस्पेंसरी में जाती है और डॉक्टर के पैरों में गिरकर कहती है - "डाक्टर बाबु, भगवान के लिए इस मासूम को बचालो। आप जो भी किंमत चाहो मै देने को तैयार हूँ । जल्दी करो साहब, वरना मेरे बच्चे को कुछ हो जायेगा"।[7] लेकिन सुगिया ने अपने बच्चे को

बचाने की हर संभव कोशिश की थी। लेकिन बहुत देर हो चुकी थी, बच्चा मर चुका था। इस कहानी में कावेरी जी ने मजदूरों के प्रति ठेकेदारों जैसे लोगों के रवैये और शोषण को दिखाया है।

2.6 अंगारा - जमना

कुसुम मेघवाल जी की **'अंगारा'** कहानी में स्त्री के विद्रोही एवं प्रतिरोधी रूप को देखा जा सकता है। इसकी नायिका जमुना का यौन शोषण गांव के ठाकुर के सबसे बड़े बेटे सुमेर सिंह और उसके चाचा द्वारा किया जाता है। जब जमना वहां से भागकर घर आई तो किसी ने उसका साथ नहीं दिया, केवल उसके भाई ने ही उसका सहारा दिया और उसे आत्मविश्वास दिलाया। जमना के पिता हरखू को अपनी बेटी की इज्जत खोने का दुख है लेकिन वह बदला लेने के बारे में नहीं सोचता। जमना का भाई हीरा नई पीढ़ी का लड़का है वह घर की इज्जत सुमेर सिंह द्वारा लूट जाने पर बदला लेता है। सरकार और पुलिस सुमेर सिंह को सजा नहीं देती। जमना खुद उसे सज़ा देती है। जमना सुमेर सिंह के शरीर से उसकी मर्दानगी का प्रतीक चिन्ह काट देती है और अपना प्रतिशोध पूरा कर लेती है। ऊंची जाति के लोग बेखौफ होकर जब चाहें किसी पर अत्याचार करने का साहस करते हैं। यही वह विचारधारा है जिसे जमना ने ख़त्म कर दिया है। जमना ने निडर होकर अपने लिए लड़ाई लड़ी है।

2.7 अंतिम बयान - अतरो

कुसुम वियोगी जी की **'अंतिम बयान'** एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने साथ हुए अन्याय का प्रतिरोध करती है। कहानी में गांव के मुखिया ठाकुर का बेटा राजेंद्र अतरो के साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है। अतरो इस निंदनीय व्यवहार का जवाब राजेंद्र का लिंग काटकर देता है। अगले दिन राजेंद्र की लाश एक कुएं में मिलती है। पूरे गांव को राजेंद्र की हत्या का शक है और पुलिस का ध्यान भी अतरो पर था। इसके लिए इंस्पेक्टर

ने उसे थाने जाकर बयान देने को कहा। गांव की लड़की होने के कारण गांव वालों ने इस पर आपत्ति जताई। लेकिन अतरो ने हिम्मत करके इस मामले में सबसे बोली "गाँव वालों और सिपाइया तू भी सुन। बयान चाहिए ज़रूर दूँगी। ज़रा रुक"।[8] अतरो घर के अंतर जाकर कागज़ का बंडल लेकर आई। उसमें राजेन्द्र का कटा हुआ लिंग था। यहाँ अतरो सबके सामने अपना बयान सुनाता है। वह किसी से डर के बिना आत्मविश्वास से सच को सबके सामने रखती है। अतरो की इस हरकत से राजेन्द्र का इज्ज़त लूट जाते है एवं अतरो की इज्ज़त बढ़ती है।

2.8 यह अंत नहीं - बिरमा

ओमप्रकाश वाल्मिकि की **'यह अंत नहीं'** हमारे देश में कानून व्यवस्था का हिस्सा मानी जाने वाली पुलिस में जातिवाद और लैंगिक भेदभाव की आपराधिक मानसिकता को उजागर करता है। यह एक दलित परिवार के मेहनती मजदूर के जीवन में अचानक हुई घटना के संबंधित में है। इस कहानी में मंगलू और सरबती पति पत्नी है, बिरमा और किसन उनके बच्चे है। हर माता-पिता की तरह मंगलू और सरबती भी चाहते थे कि उनके बच्चे पढ़ें और अच्छी ज़िंदगी जिएँ। यही सोचकर मंगलू ने किसन को शहर के कॉलेज में भेज देते है। और उसको पढ़ाई से वंचित किए जाती है। किसन महीने-दो महीने में अपने दोस्तों के साथ गाँव आता है और परिवार के साथ रहता है। जब भी उसे समय मिलता है, तो वह खेतों में अपने माता-पिता की मदद करता है। उस दिन बिरमा और उसके माता-पिता धान काटने के लिए तेजभान के खेत में गए हुए थे। उस दिन मंगलू और सरबती ने सबसे पहले बीरमा को घर भेजा और कहा कि वह घर जाकर रोटियाँ बना ले, क्योंकि उन्हें आने में देर हो जायेगी। घर जाते समय सचिंदर ने उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की। सचिंदर ने बिरमा के गाल को छुआ और फिर अपना हाथ उसकी छाती की ओर बढ़ाया। तभी बिरमा ने अपने सिर पर रखी गठरी सचिंदर के सिर पर फेंकी और उस पर जोरदार हमला किया। उसके हमले के कारण सचिंदर उठ नहीं सका। बिरमा के इस

अचानक हमले से डरकर हवस का प्यासा सचिंदर भाग गया। बिरमा यह घटना अपने परिवार को बताती है और पूरी ताकत से समाज से लड़ती है। पुलिस में रिपोर्ट करना गया तो पुलिस में रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई क्योंकि किसान दलित परिवार से था। पुलिस की ऐसी बदसलूकी देखकर किसान ने पंचायत में शिकायत की। लेकिन पंचायत भी ऊंची जाति की थी। वहां दलित की कौन सुनता? मामले को हल्के में दबा दिया गया। पंचायत की बैठक में सचिन को सिर्फ चेतावनी और पांच रुपए का जुर्माना देकर छोड़ दिया गया। लेकिन बिरमा जैसी दलित लड़की अपनी चेतना के कारण उच्च वर्ग का विरोध करती है और उन्हें सबक भी सिखाती है। बिरमा एक स्वाभिमानी एवं आदर्श महिला है। इस प्रकार इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने ऊंची जातियों द्वारा दलित महिलाओं के खिलाफ हिंसा की ओर इशारा किया गया है।

2.9 ए.टी.एम - सुमित्रा

टेकचंद जी की **'ए.टी.एम'** कहानी में एक शिक्षित और आत्मनिर्भर महिला की विडंबनाओं को उजागर किया गया है। आज भी हम एक विरोधाभासी समाज में रहते हैं जहां परिवार या पुरुष चाहते हैं कि महिला कमाए लेकिन 'उसे अपने हाथों से कमाए गए पैसे का निवेश करना चाहिए'। शादी के बाद पति का परिवार लड़की पर अधिकार का दावा करता है। इस कहानी में भी यही हुआ है कि नायिका सुमित्रा एक पढ़ी-लिखी और कामकाजी लड़की है। शादी के बाद वह अपने ससुराल का घर भी अच्छे से संभालती हैं। किंतु ससुराल वालों को अपना ए. टी. एम. न देने के कारण चरित्रहीन कहकर उसके घर वालों के सामने उस पर आरोप प्रत्यारोप लगाये जाते हैं। और उसके परिवार एवं सभी को बुलाकर बैठक रखने से भी चुप चाप सब सुनती रहती हैं । परिचर्चा के अंत में वह कहती है- "मैं मर मर कर कमाऊँ और कमाई पर मेरा हक भी नहीं.... अपने लिए तो किसान पंचायत मैं सीना ठोक कै कहो हो के 'धरती किसकी? जो बौबे उसकी ! फिर

मेरी बारी में 'दोगली बात क्यूँ ?' मेरी मेहनत की कमाई पर मेरा हक क्यूँ न हो? अपना ए.टी.एम., अपनी कमाई मैं किसी को देने वाली नहीं हूँ! चरित्र खराब बताओं, न्यारा कर दो या घर से निकाल दो....”।[9] कहानी में नायिका का यह कथन आत्मविश्वास का परिचायक है। हमारे समाज में परंपरा है कि शादी के बाद लड़की को अपना सबकुछ ससुराल वालों को देना पड़ता है। लेकिन यहां सुमित्रा अपनी सारी मेहनत की कमाई ससुराल वालों को नहीं देना चाहती। और वह अपने पैरों पर खड़े होने के लिए किसी से नहीं डरती। कहानी नई स्त्री (शिक्षित और आत्मनिर्भर) की विडंबना को उजागर करती है। हम आज भी ऐसे विडम्बनापूर्ण समाज में रह रहे हैं जहां परिवार या पुरुष तो चाहते हैं कि महिला कमाए लेकिन वह अपने हाथों से कमाए गए पैसों का निवेश करे। दलित समाज मूलतः पितृसत्तात्मक समाज रहा है। जहाँ पुरुष का वर्चस्व है और स्त्री की स्वतंत्रता का कोई स्थान भी नहीं है।

2.10 मैं पढ़ूंगी - गुड़िया

विपिन बिहारी जी की **‘मैं पढ़ूंगी’** कहानी में एक दलित पिता को अपनी बेटी की शिक्षा के लिए प्रोत्साहन और शक्ति के स्रोत के रूप में दिखाया गया है। कहानी से पता चलता है कि बेटी ने तमाम कठिनाइयों के बावजूद अपने पिता की इच्छा पूरी की। कहानी में मोहर बाबू अपनी बेटी को शिक्षा प्राप्त करने के लिए भेज देते हैं। मन में कई तरह की शंकाएं उठीं, फिर भी बेटी की खुशी के लिए ऐसा फैसला लिया। आमतौर पर ऊंची जाति के लोग भी अपने बच्चों को शिक्षा के लिए दूर नहीं भेजते हैं। दलित होने के कारण समाज इन्हें शिक्षा से दूर रखता है। दलितों द्वारा अपनी बेटियों को विदा करने से वहाँ रहने वाले लोगों में बेचैनी पैदा हो गई। इस कहानी जहाँ मोहर बाबू की बे टी को भर्ती कराया गया वहाँ के लोगों की मानसिकता भी ऐसी ही थी “दलित होकर इतनी दूर से आई हो पढने के लिए तुम्हारे मॉ-बाप को इतनी हिम्मत कहॉ से हुई इतनी दूर तुम्हें भेजने की”।[10]

कॉलेज के पहले कुछ दिनों तक तो उनकी जिंदगी अच्छी रही, लेकिन बाद में जब उनकी जाति के बारे में खबरें फैलने लगीं तो बच्चे उन्हें अलग नजरिए से देखने लगे। कॉलेज के लड़कों ने उसकी जाति का पता लगाकर उसे प्रताड़ित किया और उनकी हालत ऐसी कर दी गई कि वह फिर कभी इस कॉलेज में कदम नहीं रखना है। उसकी हालत देखकर परिवार ने भी उसे कॉलेज छोड़ने के लिए मजबूर किया लेकिन गुड़िया ने ऐसा कहा कि "मैंने अपनी पढ़ाई छोड दी तो ये लोग जीत ही जाएगे। ये लोग ऐसा ही चाहते हैं। लेकिन मैं उन्हें जीतने नहीं दूंगा। कितनी बदतमीजियां वे मेरे साथ करते हैं, देखती हूँ मैं"।[11] इस कहानी में गुड़िया को इतना सब कुछ सहने के बावजूद भी वह अपनी पढ़ाई छोड़ने को तैयार नहीं हुई। गुड़िया फिर से शिक्षा प्राप्त करने, ऐसे लोगों के खिलाफ लड़ने और किसी भी प्रकार का शोषण बर्दाश्त किए बिना अपना अधिकार पाने के लिए आगे आई। उसने अपनी पढ़ाई उसी कॉलेज से पूरी की है। दलित होने के साथ-साथ वह एक महिला भी हैं, फिर भी उनमें हालात से लड़ने की ताकत दिखाई देती है।

2.11 गुफाएँ - अपूर्वा

सूरज बड़त्या जी की **'गुफाएँ'** कहानी की नायिका अपूर्वा अपने पिता और मामा के परस्पर विरोधी विचारों के कारण अपने प्रेमी राजन से शादी करने में असमर्थ है, इसलिए उसे मजबूरन अमन से शादी करनी पड़ती है। मार्क्सवादी विचारों वाले अमन अंदर से पुरुषवादी विचारों के समर्थक हैं। पिता और पति दोनों की कथनी और करनी में अंतर है। अपूर्वा एक पढ़ी-लिखी कामकाजी लड़की है। वह बचपन से ही अपने पिता से दलितों के उत्थान के बारे में सुनकर बड़ी हुईं थी। दलित उत्थान की बात करने वाले और अंबेडकरवाद को मानने वाले उनके पिता और मामा असल जिंदगी में इसका पालन नहीं करतें। यहां वह अपने परिवार के सम्मान के लिए अपने प्यार का बलिदान देती है। उसके पिता, जो सामाजिक सुधार के लिए काम करते हैं और स्त्रियों की आजादी की बात करते हैं, अपनी पत्नी को घर पर बोलने की आजादी नहीं देती है। अपूर्वा को भी अपने पति के घर में कोई

सम्मान नहीं मिलता था। बाद में जब उसके पति ने उसे घर से निकाल दिया तो वह फिर कभी उस घर में नहीं लौटी। क्योंकि वह समझ गई थी कि जिस घर में लड़की जन्म लेती है वह उसका अपना घर नहीं बन सकता, जैसे उसके पति का घर उसका अपना घर नहीं बन सकता। असल में वह समझ गई थी कि वह कहीं की नहीं है, न अपने घर की, अपने पति के घर की। स्वयं नौकरी करने से बाद में वह अकेली रहती है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद एक महिला अपनी अलग पहचान बना सकती है और इस कहानी के द्वारा हम एक महिला को आधुनिक विचारधारा को अपनाते हुए देख सकते हैं। वैवाहिक रिश्तों में समकालीन तनाव और पुरुषों के परस्पर विरोधी चरित्रों के कारण यह कहानी अनूठी है।

2.12 जीत - रेखा

दीपा जी की कहानी 'जीत' ऐसे लोगों के समूह को दर्शाती है जो शिक्षित तो थे फिर भी अशिक्षितों की तरह व्यवहार करते थे। इस कहानी में रेखा बचपन से ही पुलिस ऑफिसर बनने का सपना देखती है। जब वह 9वीं कक्षा में पढ़ती थी तो उसके स्कूल में 15 अगस्त के जश्न के मौके पर गृह अधिकारी (एस.एच.ओ) चारुलता जोशी मुख्य अतिथि बनकर आई। भाषण के बाद रेखा और उनकी दोस्त माया, चारुलता जोशी से मिलने गईं। चारुलता को खाकी वर्दी पहने देखकर दोनों खुश हुए। उन दोनों को देखकर एक अध्यापिका उन्हें डांटती है। यह देखकर चारुलता मैडम उन्हें बात करने के लिए बुलाती हैं। चारुलता मैडम से बात करने पर वह उन्हें दोनों स्कूलों के शिक्षकों के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभव बताती हैं। अध्यापिका और कक्षा की सभी लड़कियाँ उसे अछूत कहती हैं और उसे कक्षा में सबसे पीछे बैठाया जाता है। चारुलता मैडम को भी ये सब सुन के अच्छा नहीं लगा। वह मन ही मन सोचने लगी “शिक्षित होने की बावजूद शिक्षकों के मस्तिष्क से जातिभेद क्यों नहीं निकल पा रहा है?”।[12]

चारुलता मैडम को देखकर रेखा के मन में पुलिस बनने की चाहत और बढ़ गई। रेखा 12वीं कक्षा बहुत अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर 'सिपाही भर्ती परीक्षा' की तैयारी की। शारीरिक परीक्षण में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए मुख्य पुलिस निरीक्षक उसकी प्रशंसा करते हैं। लेकिन बाद में जब उसे पता चला कि उसके माता-पिता का काम मैला ढोना है, तो हेड इंस्पेक्टर का सौहार्दपूर्ण व्यवहार नफरत में बदल जाता है। वे उसे शौचालय में लाता है और शौचालय का कूड़ा साफ करने के लिए कहता है। वह शौचालय साफ करने से इंकार कर देती है। क्योंकि रेखा को अपनी जाति और माता-पिता की नौकरी पर गर्व है। वह अपने आप को दूसरों से कमतर नहीं समझती। अंत में परीक्षा परिणाम की सूची में रेखा का नाम नहीं है। अपने माता-पिता के मना करने के बावजूद वह 'सिपाही भर्ती परीक्षा' के हेड क्वार्टर में जाकर इस मामले की लिखित शिकायत करती है और हेड इंस्पेक्टर पर संदेह व्यक्त करते हुए उसके दुर्व्यवहार के बारे में भी लिखती है। परिणामस्वरूप, उसका नाम परिणाम सूची में अंकित होता है। वह अपनी मेहनत से अपना सपना पूरा करती है। स्त्री चेतना की जागृति एवं अस्मिता बोध पर कहानी में परिलक्षित होती है।

2.13 हार गयी ज़िदगी - सुमन

कौशल पवार जी की कहानी **'हार गयी ज़िदगी'** में दलित समाज की समस्याओं और अंबेडकरवादी विचारधारा रखनेवाली एक दलित स्त्री के संघर्ष को दर्शाया गया है। यहाँ नायिका सुमन की बस्ती में जाटों ने आग लगा दी। आग का धुआं देखकर सुमन और उसके दादा ने घर से बाहर निकलने की कोशिश की लेकिन दबंगों ने घर का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया था। वह चिल्लाती रही पर किसी को रहम नहीं आया। दादा भी उस दरवाज़े को तोड़ नहीं पाया था। धीरे-धीरे आग ने सुमन और उसके दादा की जान ले ली। कहानी में सुमन का परिचय इस तरह दिया गया है- "सुमन जो उस बगड़ की सबसे सुन्दर, सुशील, समझदार और बहुत ही पढ़ी-लिखी लड़की थी, आइ.ए.एस. बनना चाहती थी।

बारहवीं की तैयारी के साथ-साथ वह आन्दोलन में जुट गयी थी। पर बिल्कुल सामान्य थी। हर चीज़ को बारीकी से देखने और समझने वाली। बहुत मिलनसार थी वह, पर उसको बचपन में ही पोलियो मार गया था। वह चल फिर नहीं सकती थी। अपनी व्हील चेयर पर बैठे-बैठे ही वह सारे काम निपटाया करती थी"।[13] सुमन एक ऐसी लड़की थी जो खुद विकलांग होने के बावजूद दलितों की सुधार के लिए कुछ करना चाहती थी। "न सिर्फ सुमन ख़त्म हुई बल्कि एक पूरी जमात सदा-सदा के लिए भय, अपमान, डर, आतंक की बलि चढ़ गयी थी जिससे उबरने के लिए न जाने कितना समय लगेगा"।[14] यहां ऊंची जातियों के कृत्यों के कारण एक पूरा समुदाय हमेशा के लिए भय, अपमान, भय और आतंक का शिकार बन गया। सुमन जैसी महिलाओं की कहानियाँ दूसरों को प्रेरित करती हैं। यहां पूंजीपतियों के खिलाफ प्रतिरोध के कारण उसकी हत्या कर दी जाती है।

2.14 नयी धार - रमा

अनीता भारती जी की **'नयी धार'** कहानी में दलितों के साथ होने वाले भेदभाव और दलितों प्रति गैर-दलितों के नज़रिया को दर्शाया गया है। कहानी की नायिका रमा दलित भेदभाव विरोधी समिति का हिस्सा हैं। इस समिति के माध्यम से यह दलितों पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ अनुयोजन करती है। महाराष्ट्र के खैरलांजी गाँव में दलित भोतमाँगे परिवार के चार सदस्यों की नृशंस हत्या एवं इस जघन्य घटना में भोतमांगे की पत्नी सुरेखा और बेटी प्रियंका का गांव के दबंगों ने सरेआम बलात्कार करके ही हत्या किया है। दलित भेदभाव विरोधी समिति के दौरान इस विषय पर बैठक बुलाने का निर्णय लिया गया है। रमा को समाज सेविका अभिव्यक्ती जी का व्यक्तित्व बहुत पसंद है। इसलिए रमा ने मुख्य वक्ता के रूप में अभिव्यक्ति जी को आमंत्रित करने के लिए अपनी राय व्यक्त की और सभी ने मना कर दिया क्योंकि अभिव्यक्ति एक गैर-दलित प्रचारक है। इसके बजाय रमा ने अभिव्यक्ति जी को आमंत्रित किया क्योंकि उनका मानना था कि दलितों के साथ

गैर-दलितों को शामिल करके, दोनों दलित उत्थान के लिए एक साथ काम कर सकते हैं। चूंकि रमा को विश्वास था कि गैर-दलितों से मिलने से दलितों की समस्याओं को न्याय मिलेगा। लेकिन अभिव्यक्ति जी रामा के कार्यक्रम में नहीं बल्कि डेमोक्रेटिक राइट थिंकिंग फोरम की बैठक में मुख्य वक्ता बनकर आईं। जब रमा ने अभिव्यक्ति जी के भाषण सुना तो उसको मन में का घोर विरोध हुई क्योंकि वह रमा के विचारधारा के प्रतिकूल था। रमा का दोस्त सागर उसे कार्यक्रम का वक्ता बनने के लिए कहता है। आपसे बेहतर कोई नहीं है। यहां प्रगतिशील लोग दलित मुद्दे पर अपने विचार रखते हैं और उन्हें जातिवादी फासीवादी भी कहते हैं। रमा को खुद एहसास है कि वह अपनी लड़ाई खुद लड़ेगी और उसे किसी की दया की जरूरत नहीं है। रमा की अपने दलित समुदाय और लोगों के प्रति निष्ठा है। उनकी विचारधारा दलित समुदाय के प्रति बहुत महत्वपूर्ण है।

2.15 प्रतिकार - मीता, सुरेश का पत्नी

सुमित्रा महरोल जी की **'प्रतिकार'** कहानी में इस सामाजिक सत्य को उजागर किया गया है कि दलित जाति के लोग चाहे कितनी भी शिक्षा प्राप्त कर लें या कितने भी बड़े पद पर पहुंच जाएं, ऊंची जाति के लोग उनका सम्मान करने को तैयार नहीं होते। इस कहानी के पात्र मीता अपने पति के साथ शहर में अच्छा जीवन व्यतीत कर रही थी। वहां के सभी पड़ोसियों से उनके अच्छे संबंध थे। लेकिन जब यह पता चला कि मीता और उसके पति एक दलित परिवार से हैं, तो सुरेश की पत्नी ने मीता को संघ से अलग कर दिया। मीता अकेलेपन में पड़ गई, फिर भी उसने उन लोगों को कानून के मुताबिक जवाब दिया। वह आर्थिक व शैक्षणिक दृष्टि से समर्थ होने के बावजूद जातिगत भेदभाव के कारण स्वयं को अनेक बार उपेक्षित - अपमानित महसूस करती है और बग़ैर किसी अपराध के समूह से बाहर एकाकी जीवन जीने के लिए स्वयं को अभिशप्त पाती है। यहां मीता अपने सम्मान के लिए लड़ती है। यहाँ मीता के ज़रिए अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाली एक दलित महिला का विद्रोही चित्रण किया गया है।

2.16 हाथ तो उग ही आते हैं - सूतो, रुक्खो

श्योराज सिंह बेचैन जी की कहानी 'हाथ तो उग ही आते हैं' जातिवाद से पीड़ित लोगों की मानसिक चिंता को व्यक्त करती है। समाज में चाहे कितने भी सुधार आ जाएं और लोग कितने भी शिक्षित हो जाएं, लेकिन लोगों के मन से जातिवाद खत्म नहीं हो सकता। दिल में ज़हर भरे लोग गांव या शहर कहीं भी हो सकते हैं। गांव की ऊंची जाति की महिलाएं सोचती हैं कि दलित महिलाएं इंसान भी नहीं बल्कि अछूत चीज़ हैं। उनके बच्चे भी हमारे बच्चों की तरह शिक्षित जीवन जीने में सक्षम नहीं हैं। सूतो इसी विचारधारा वाली उच्च जाति की महिला का प्रतीक है। सूतो अपने पति चौधरी जी के साथ शहर में रह रही हैं। उसके घर में नौकरानी भी कोई ऊंची जाति से होनी चाहिए, दलित से नहीं, यही सूतो का विचार है। अपने पति के समझाने पर वह नीच जाति के लोगों को काम में रखना तत्पर की। दलित युवती रुक्खों ने सूतो के घर में काम करना शुरू किया, एक दिन बच्चे की बीमारी के कारण वह अपने बच्चे को लेकर काम के लिए आना पड़ा। मोटरसाइकिल चलाते समय सुतो के बेटे ने उसे टक्कर मार दी और रुक्खो के बच्चे का नाजुक हाथ कुचल गया। ये सब देखकर भी सुतो चुप रह जाती है। रुखो अपने बच्चे को लेकर कई अस्पतालों में जाती है। वह शहर के बारे में कुछ भी जाने बिना बहुत सी कठिनाइयों से गुजरती है। अंत में बच्चे के दोनों हाथ काटना पडता है। यहां एक उच्च जाति की महिला के क्रूर प्रकृति और संत दलित महिला के अपने बेटे के प्रति प्रेम को दर्शाया गया है। यहां रुक्खो पर ऊंची जाति के पुरुषों द्वारा नहीं बल्कि महिला द्वारा अत्याचार होता है। रुक्खों गाँव से इन सब कुरीतियों से बचकर शहर आकर नई ज़िदगी जीनने वाली स्त्री है और सुतो गांव की बुराइयों को शहर में लेकर जीतने वाली स्त्री है। अशिक्षित होकर भी रुक्खो में ममता, दया, दूसरों के प्रति आदर, आदी गुण है। शिक्षित होने के बाद भी सुतो पारंपरिक रीति-रिवाजों के तहत रहती हैं।

2.17 चोट - रज्जो

सूरजपाल चौहान **'चोट'** कहानी के माध्यम से छुआछूत का एक अलग रूप को दिखाया है। कहानी का केंद्रीय पात्र एक दलित युवती रज्जो है। रज्जो का पति सरकारी कर्मचारी था। पति की मृत्यु के बाद रज्जो को वह नौकरी मिलनी थी। परंतु जब किसी अन्य सरकारी कार्यालय में चपरासी के पद पर कार्यरत हरचरण शर्मा की मृत्यु हो गई, तो उनकी अनपढ़ पत्नी को अनुकंपा के आधार पर चपरासी के पद पर नियुक्त किया गया। रज्जो आठवीं पास थी। उसे जान-बूझकर सरकारी सफ़ाई कर्मचारी के पद पर लगाया गया। रज्जो सुन्दर दिखने वाली और आकर्षक व्यक्तित्व वाली एक खूबसूरत लड़की है। जो एक साधारण गृहिणी, सांसारिक बातों से अनभिज्ञ। पति की मौत के बाद वह अपनी उच्च अधिकारी पवन शर्मा के प्यार के जाल में फंस गई। पवन शर्मा उससे झूठा प्यार करके धोखा देता है। और उससे नफरत करता है क्योंकि वह दलित जाति से है। दलितों का सामाजिक शोषण और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित करने वाली विभाग की मानसिकता को यहाँ दिखाया गया है। रज्जो उन कई लड़कियों का प्रतीक है जो वरिष्ठ अधिकारियों के झूठ में फंस गई हैं।

2.18 सुनीता - सुनीता

रजत रानी 'मीनू' जी की कहानी 'सुनीता' में यह दर्शाया गया है कि जिस प्रकार उच्च जातियां पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन करती हैं तथा महिलाओं को अपने पैरों के नीचे चटाई की तरह दबाकर रखती हैं, उसी प्रकार निम्न जातियों में भी लड़कियों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता है। सुनीता एक छोटे से गांव के मध्यम वर्गीय दलित परिवार की लड़की है। दलित जाति से ताल्लुक रखने वाली सुनीता पढ़-लिखकर कुछ हासिल करना चाहती थी, लेकिन उनके पिता और समाज के अन्य लोग उनकी पढ़ाई के खिलाफ थे। इसके अलावा कुछ शरारती तत्व भी उसे परेशान करते थे। जब वह स्कूल से लौटती थी

तो कुछ गुंडे उसे छेड़ते थे। उसने सब कुछ अनदेखा कर दिया और मन ही मन सोचा कि- "कैसे इन बदमाशों के दाँद खट्टे किये जाएँ" फिलहाल वह अपनी शिक्षा पूरी करना चाहती थी। इसलिए वह पढ़ाई से अपना मन भटकने नहीं देती थी। वह सोचती, यदि माँ-पिताजी को गुंडों के बारे में बताएगी तो वह निश्चित ही उसकी पढ़ाई रोक देगें"।[15] अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए उसने चुपचाप सब कुछ सहा।

सुनीता के पिता छेदालाल बचपन से ही उससे ज्यादा अपने बेटे को प्यार करते थे। छेदालाल उससे कहता है- "ए सुनीता, कान खोल के सुन! हमें तुम्हें कलट्टर-वलट्टर तो बनाना है नहीं, और ना ही तुम बन पाएगी। फिर तेरी पढ़ाई लल्ला से बढ़कर तो नहीं है, वैसे भी तू पराए घर जाएगी। तो चिट्ठी-पत्री लायक थोडी-सी पढ़ जा। वंश तो लल्ला ही चलाएगा"।[16] उसे किसी ने भी उसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने में मदद नहीं की। वह अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करके एम.एल.ए बन जाती है। वह पितृसत्तात्मक समाज की सोच को बदल दिया और भले ही वह लड़की हो, हर काम एक लड़के की तरह कर सकती है, और साबित करत दी कि यहां नीची जाति या ऊंची जाति जैसी कोई चीज नहीं है। यहाँ दलित स्त्री की संघर्षपूर्ण जीवन में लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए परिवार और समाज से मिली त्रासदियों और विसंगतियों का खुलकर वर्णन किया है। सुनीता हर उस लड़की के लिए एक प्रेरणास्रोत है। जो पितृसत्तात्मक परिवार में पैदा हुई है और अपने सपनों को पूरा करती है। सुनीता अपने पिता के विचार को बदलने में सफल रहीं क्योंकि उन्होंने यह साबित कर दिया कि महिलाएं पुरुषों के साथ समान रूप से काम कर सकती हैं।

2.19 टूटता वहम - लेखिका

सुशीला टाकभौरे जी की **'टूटता वहम'** कहानी में शिक्षित उच्च जाति और दलित जाति के बीच की मानसिक दूरी को प्रस्तुत कर दिया गया है। आज देश इतना प्रगतिशील

हो गया है, फिर भी जातिवाद और छुआछूत की भावना सामाप्त नहीं हुआ है। इसमें दलितों की आवास संबंधी समस्याएँ, भेदभाव की समस्या, भोजन की कमी आदि को दर्शाया गया है। यहां समानता के नाम पर झूठा भ्रम दर्शाया गया है। जो दिमाग को और अधिक कष्ट पहुंचाता है और सोचने पर मजबूर कर देता है। लेखिका अपने अनुभव से जातिवाद और छुआछूत की कठोर स्थिति को समझाती है। लेखिका स्वयं अनुसूचित जाति से है। वह स्वयं शिक्षित होने के बावजूद संकीर्ण मानवीय व्यवहार की पात्र बन जाती है। लेखिका जब नागपुर में शिक्षक बनकर आती हैं तो संस्था के व्यवस्थापक बहुत खुश होते हैं। स्कूल में जब भी कोई कार्यक्रम होता है तो बड़े-बड़े अतिथि और वक्ता आते रहते हैं। व्यवस्थापक बाहर से आने पर लेखिका को प्रत्येक व्यक्ति से परिचय कराते हुए उसकी जाति के बारे में बताते हैं। वह बार-बार जाति का उल्लेख करने के पीछे उनके मकसद को पहचानती है। एक बार उन्होंने अपने घर पर सभी साथी प्रोफेसरों को भोजन के लिए आमंत्रित किया। केवल चार प्रोफेसर आए और उनमें से दो अनुसूचित जाति से थे। यहाँ केवल अनुसूचित जाति के लोगों ने ही भोजन किया और बाकी लोगों ने व्रत का हवाला देकर पानी भी नहीं पिया।

ऐसी ही एक और घटना उन्होंने बताया है कि जिस कॉलोनी में वह रहती हैं, वहां उन्हें एक प्लॉट खरीदना है। लेकिन उसके पास इतने पैसे नहीं हैं। फिर उसने अपने पति के सहपाठी शिक्षक शर्माजी के साथ मिलकर आधा प्लॉट खरीदने की योजना बनाई। लेकिन शर्माजी ने इसे टाल दिया। तो उस प्लॉट को कोई और खरीद ले-"जब भी हम उस प्लॉट के पास से गुज़रते हैं। उस पर बने मकान को देखकर लगता है हम भी ऐसा ही मकान बना लेते यदि हमें धोखें में न रखा गया होता"।[17] दलितों को हिंदुओं द्वारा जातिगत भेदभाव के उद्देश्य को समझकर अपने सम्मान और अस्तित्व का एहसास कराना आवश्यक है। इस प्रकार उसने अपने अनुभवों का वर्णन करने का प्रयास किया है। वह सामाजिक असमानता के बारे में जागरूकता फैलाता है। लेखिका की संदेश है कि इंसान को शिक्षित करने से समाज में कोई बदलाव नहीं आता, यदि परिवर्तन लाना है तो मानव मन से जाति के प्रति

भाव को स्वयं ही दूर करना होगा। जो लोग शूद्रों को छूने की कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे, आज उनके साथ बैठते हैं, उनके साथ खाते हैं। हाथ पकड़कर बातें करने लगे हैं। यह दिखाने के लिए कि हम जातिगत भेदभाव में विश्वास नहीं करते। लेकिन इसके पीछे का सच है कि हर तरह जातिवाद अभी भी है।लेखिका एक सशक्त शिक्षित स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है।

2.20 सिलिया - सिलिया, सिलिया की माँ

सुशीला टाकभौरे जी की **'सिलिया'** में समाज में व्याप्त जातिभेदअसमानता की , भावना आदि समस्याओं को उठाया है। कहानी के केंन्द्र पात्र सिलिया पढ़ाई करके आत्मविश्वास के साथ अपने समाज को सुधारना चाहती है। वह पढाई बहुत अच्छे से करती थी। सभी गुरुजनों से उसे मानमिलता है। सम्मान- उसे छुआछूतसेठी जी ,जातिभेद , महाशय का ढोंग अच्छा नहीं लगता है।वह पढ़ लिखकर स्वयं को ऊँचा साबित करती है , और वह अपने समाज को उन्नति की ओर ले जाने के लिए प्रयास करती है। सिलिया समाज से जातिभेद मिटाने की प्रयत्न करती है। इधर, सिलिया की तरह उसकी मां भी लड़कियों के लिए पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बनना जरूरी मानती हैं। सिलिया की सबसे बड़ी ताकत उसकी माँ है। जब उसकी माँ की उम्र की अन्य स्त्रियाँ शिक्षा को आवश्यक न समझती थीं, तब भी सिलिया की माँ सिलिया के साथ खड़ी रहती थी। वह समाज में दलित स्त्रियों की पहचान और मान्यता के लिए संघर्षरत लड़की है। सिलिया एक ऐसी लड़की है जो अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करती है। उनमें साहस और आदर्श हैं। सिलिया को एक आदर्श नारी बनाने में माँ का बहुत बड़ा योगदान था। एक दिन नई दुनिया अखबार में विज्ञापन आया- 'शूद्र जाति की दुल्हन चाहिए'। भोपाल, मध्य प्रदेश के जाने-माने युवा नेता सेठी जी एक अछूत लड़की से शादी करके एक आदर्श स्थापित करना चाहते हैं। सिलिया की माँ को सभी सलाह देते हैं। लेकिन सिलिया की माँ कहती है-"नहीं भैया, यह

सब बड़े लोगों के चोचले हैं। आज समाज को दिखाने के लिए हमारी बेटी से शादी कर लेंगे और कल छोड़ दिया तो हम ग़रीब लोग, उनका क्या कर लेंगे। अपने इज्ज़त अपनी समाज में रहकर भी हो सकती है। उनकी दिखावे की चार दिन की इज्ज़त हमें नहीं चाहिए। हमारी बेटी उनके परिवार और समाज में वैसा मान-सम्मान नहीं पा सकेगी, न ही हमारे घर की रह जाएगी। न इधर की न उधर की हमसे दूर कर दी जाएगी। हम उसको ख़ूब पढ़ाएँगे, लिखाएँगे उसकी किस्मत में होगा तो इससे ज़्यादा मान-सम्मान वह ख़ुद पा लेगी अपनी किस्मत वह ख़ुद बना लेगी"।[18]

सिलिया ने अपने निजी जीवन में जो देखा उसके अनुसार वह समाज में बदलाव लाना चाहती थी और इस काम में वह सफल भी रही। वह अपने जीवन के माध्यम से सभी दलित महिलाओं को शिक्षा का महत्व बताती हैं। उसका अपना विचार है कि अगर महिलाओं को अच्छी शिक्षा मिले तो वे दुनिया बदल सकती हैं।

2.21 ग्रहण - बिरम की बहू

ओमप्रकाश वाल्मीकि जी की **'ग्रहण'** में बीरम की बहू की कहानी है। बहू जो आए दो साल हो गए थे, फिर भी उसकी गोद में बच्चा नहीं था, इसलिए ससुराल में चर्चा शुरू हो गई। आस-पड़ोस की महिलाओं को भी बातचीत के लिए विषय मिल गए। ऐसी घृणित बातें 'बहू' को बुरे लगने लगा। उसने अपने पति को सलाह दी कि वह शहर जाकर देखें कि क्या गड़बड़ है। लेकिन इसका परिणाम यह होता है कि उसे जवाब में केवल एक जोरदार थप्पड़ ही मिलता है। उसकी सास भी उसे आशीर्वाद देने की बजाय गाली देने लगी। एक दिन उसकी सास का निधन हो गयी। उसकी मौत की जिम्मेदारी भी उसके सिर पर डाल दी गई। इन सब से बचने के लिए बहू को बच्चा चाहिए था। चंद्र ग्रहण के दिन घर से भागे हुए लोग हवेली में अनाज मांगने जाते हैं, उनमें रमेसर भी एक भागीदार था। बहू ने उसे अंदर बुलाकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए और फिर उस अध्याय को अनदेखा करके

ख़त्म कर दिया। ग्रहण के लगभग तीन महीने बाद पूरे गांव में खबर फैल गई कि बिरम की बहू भारी हो गई, चौधरी के घर में एक बार फिर खुशी का माहौल है। लेकिन वह उस रमेसर की ओर मुड़कर भी नहीं देखती, जिसने उसके जीवन में खुशियाँ ला दीं। सामाजिक दबाव और भय के कारण अपनी वास्तविकता को छुपाने वाली एक महिला का चरित्र यहाँ प्रस्तुत किया गया है और स्वाभाविक प्रतीत होता है। जब किसी महिला में कुछ कमियां होती हैं तो परिवार और समाज स्वयं उसका नाम खराब कर देते हैं, इसलिए समसामयिक समाज में कई महिलाएं परिवार और समाज में अच्छा प्रदर्शन करने की कोशिश करती हैं।

2.22 छोटी बहू - बुढ़िया

रजनी दिसोदिया जी की कहानी 'छोटी बहू' एक वृद्ध महिला की दुर्दशा को दर्शाती है जो अपने पति की मौत के बाद अकेली रह जाती है। यहां बुढ़िया की बड़ी बहू और छोटी बहू के बीच अनबन चल रही है। वे परिवार में एक-दूसरे को उकसाते हैं। बुढ़िया अपनी भैंस को अपना परिवार के सदस्य मानती थीं। बड़ा बेटा ने बुढ़िया से भैंस भेजने को कहता है। बुढ़िया नाराज़ तो है पर असल में वह भैंस को अकेले नहीं रख सकती, बूढ़ी हड्डियों में भैंस रखने की ताकत नहीं होती। फिर भी बड़े बेटे को रोकने वाला कोई नहीं था।

“इकल्ली रह लेगी घर में । तेरियै रोट्टी मन्नै जुटाणी पड़ैगी।इस भैंस ने कित से खुवावैगी। तेरी छोटी बहू के तो बोल सुण ही लिए होगें?” ।[19] **य**ह कहते हुए उसने माँ के हाथ से भैंस की रस्सी छीनने की कोशिश की। बुढ़िया की आँखें आँसुओं से भर आईं। लेकिन अचानक छोटी बहू ने आकर कहा- “भैंस के हाथ कोन्या लगाओ जी..., भैंस म्हारी सै”।[20] लेकिन छोटी बहू की सलाह से सब कुछ सुलझ जाता है और बड़ी बहू अपने पति को लेकर वहां से चली जाती है। यहां बुढ़िया ने अपनी युवावस्था में मेहनत से घर बनाया और बच्चों को पढ़ाया। बाद में, जब उसे बच्चों की ज़रूरत पड़ी, तो कोई नहीं था। जब उनके पति जीवित थे तो बुढ़िया को सभी से सम्मान मिलता था। पति के निधन के बाद उनके अपने परिवार

ने उन्हें अलग-थलग करना शुरू कर दिया, जैसे कि बुढ़िया को उस परिवार से कोई लेना-देना नहीं है। खुद दलित होने के बावजूद उन्होंने कड़ी मेहनत और मुश्किलों का सामना करके ज़िदगी में सब कुछ हासिल किया, फिर भी रिश्ते नहीं निभा पायी। उन्होंने अपना पूरा जीवन अपने बच्चों की सुख-सुविधाओं में व्यस्त बिताया। यहां पति की मृत्यु के बाद घर की देखभाल करने वाली बुआ (बूढ़ी औरत) और बहू के मजबूत चरित्र, कड़ी मेहनत और चिंताओं की उपेक्षित संरचनाओं को दर्शाया गया है।

2.23 अम्मा - अम्मा

ओमप्रकाश वाल्मिकी की 'अम्मा' कहानी की केंद्रीय पात्र अम्मा सिर्फ अम्मा ही नहीं बल्कि अपने समुदाय विशेष के प्रतीक रूप में चित्रण किया गया हैं। कहानी में जिस अम्मा की बात कर रही है उसका कोई नाम नहीं है, जब वह मायके से ससुराल आईं तो सास-ससुर उसे बहू कहकर पुकारा देवर और ननद ने भाभी और भावज, पास-पडोस की बडी दूरियों ने उसके खसम के नाम पर शुरू की, बहू नामकरण अनजाने में ही कर दिया था। जब उसकी सास उसे पहली बार सलाम की रस्म पूरी करने के लिए ठिकाने पर ले गई थी, तो उसने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन वह भी अपनी सास की तरह हाथ में झाड़ू और कनस्तर लेकर घर-घर जाएगी । यह ही नहीं सास की मृत्यु के बाद झाड़ू करने का काम उसकी ज़मीनदारी बन गयी। शुरू से लेकर आज तक मिसेज चोपड़ा के घर का काम अम्मा का परिवार ही करता है। अब वो काम अम्मा कर रही हैं। मिसेज चोपड़ा के घर का एक आदमी अम्मा को छूने की कोशिश करता है। वह उसे धक्का देकर वहाँ से चली जाती हैं और मिसेज चोपड़ा के घर का काम बीस रुपये में किसी और को दे देती हैं। वह यह घटना किसी को नहीं बताती। फिर भी बाद में उसके परिवार वाले उसे नौकरी छोड़ने के लिए डांटते थे। वह पढ़ी-लिखी नहीं है, लेकिन सामाजिक पहल और परिस्थितियाँ उसे यह समझने से नहीं रोक पातीं कि सम्मान और अधिकार पाने में शिक्षा और नौकरी बहुत

महत्वपूर्ण योगदान देता है। यही वजह है कि वह खुद को तो इस गंदगी से बाहर नहीं निकाल पाती लेकिन अपने बच्चों को इससे बचाने की पूरी कोशिश करती हैं। इस कहानी में अम्मा की खुद की कोई पहचान नहीं है, फिर भी उन्होंने अपने बच्चे और पोते के लिए एक पहचान बनाने का परिश्रम करती है। आज दलित स्त्रियों में जागरूकता फैलने के कारण वे अपने वर्ग के गंदे और घिनौने कामों को छोड़कर अच्छे कामों की ओर अग्रसर हो रही हैं। उनमें आई जागरूकता के कारण ही वह अपने समाज को नई दिशा देने में अपनी अहम भूमिका निभा पा रही हैं।

2.24 खानाबदोश - मानो, किसनी

ओम प्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'खानाबदोश' के माध्यम से लेखक ने मेहनत-मजदूरी करके किसी तरह जीविकोपार्जन करने वाले मजदूर वर्ग के शोषण, उत्पीड़न और जातिवादी मानसिकता को हमारे सामने प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में मानो और सुकिया नामक गरीब पति-पत्नी का चित्रण है। ये दोनों ईंटो की भट्टी पर काम करके अपना गुजारा करते थे। अपने काम से मतलब रखनेवाले गरीब पति-पत्नी का एक ही सपना है खुद का पक्की ईंटो का घर बनाना। दोनों भट्ठे पर मुख्तार सिंह के वहां कोयला, चूरा आदि टोंटी के माध्यम से भट्ठे में डालने का काम कर रहे थे। मालिक मुख्तार सिंह का बेटा सूबेसिंह अपने पिता की जगह भट्टे पर आया था। उसकी नज़र वहाँ पर काम करनेवाले किसनी पर पड़ी। महेश और किसनी की शादी पांच-छह महीने पहले ही हुई थी। सूबेसिंह ने किसनी को अपने अधीन कर लिया। महेश कुछ नहीं कर सका और कुछ बोल भी नहीं पाया। महेश पूरे दिन और रात शराब के नशे में बिताता था। एक दिन रात को सूबेसिंह सुकिया और मानो की झोपड़ी में भी आया। जसदेव जो मनो और सुक्किया के साथ काम करता है, जिसने मानो को अपनी बहन की तरह माना था, इसलिए वह नहीं चाहता था कि उसके साथ कुछ बुरा हो। इसलिए उसने सुबेसिंह को मनो की झोपड़ी में प्रवेश करने से रोक

दिया और बदले में उसे पिटाई झेलनी पड़ी। मानो किसनी जैसा नहीं बनना चाहती थी और सुकिया भी महेश जैसा नहीं बनना चाहती था। अंत में एक खानाबदोश की तरह सुकिया और मानो वहाँ से चले जाते है। दोनों का ईंट के मकान का सपना पूरा नहीं हो सका। इस कहानी में ऐसी एक बूरी हालत पर इशारा किया है एक महिला अपने पति के साथ रहते हुए भी खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती, क्योंकि पूंजीपतियों ने दलित पुरुषों को गुलामों की तरह बना रखा है और वे उनके खिलाफ कुछ भी नहीं कह सकते है। यहां इन दोनों पति-पत्नी को असहाय दर्शाया गया है। कहानी का संदेश यह है कि मजदूरों को सपने देखने का अधिकार नहीं है। उनका भविष्य सूबे सिंह जैसे शक्तिशाली लोगों की ताकत के आगे दब जाता है। खानाबदोशों के जीवन में कोई ठहराव नहीं होता। वे जीवन भर छोटे-छोटे पड़ाव लेते रहते हैं।

2.25 अमली -अमली, तिमगढ़ राज की रानी

हरिराम मीणा जी की **'अमली'** कहानी में दलितों के प्रति ऊंची जाति के लोगों की नफरत को दर्शाया गया है। कहानी की नायिका आमली एक साहसी लड़की है और एक नर्तकी भी है। सभी ने उसे रस्सी चलाने वाली आमली के नाम से भी पुकारता है। वह एक लंबे बांस की सहायता से रस्सी पर चलने की कला में माहिर है। यहाँ तिमनगढ़ के राजा अमली की प्रसिद्धि के बारे में सुनकर उसे एक परीक्षण के लिए चुनौती देती है कि - "मेरे किले के सदर दरवाज़े से एक कोस तक रस्सी पर चलकर जो अमली तू बता दे तो मैं तिमनगढ़ का आधा राज तुझे दूँगा"।[21]

अमली राजा के आदेश को स्वीकारती है। जब वह प्रदर्शन कर रही होती है, तो रानी के आदेश पर कोई रस्सी काट देता है और आमली नीचे गिर जाती है। अमली आत्मविश्वास और स्वाभिमान के साथ अपना कर्तव्य निभा रही थी। रानी ने अपने छल से अमली को हरा दिया और यह बात सभी को पता भी चल गयी। इतिहास में दलित नायक-नायिकाओं

की शौर्यगाथाओं का ज़िक्र नहीं मिलता है। कहानी बड़ी मज़बूती से इतिहास की इन साज़िशों से परदा उठाने में सफल हुई है।

2.26 जिनावर - बिरजू की बहू

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानी 'जीनावर' में स्त्रियों के शोषण पर प्रकाश डाला गया है। बहू बचपन में ही पिता की मृत्यु के बाद अपने मामा के साथ रहने को मजबूर हो गई। युवावस्था तक पहुंचने से पहले ही उसका मामा स्थिति का फायदा उठाता है और जबरन उसका सतीत्व भंग कर देता है। इसके बाद उसने चौधरी के कमजोर बेटे बिरम से शादी कर ली और उसके चाचा ने उसे 5000 रुपये में चौधरी को बेच दिया। वह बिरम की पत्नी बनकर चौधरी के घर जाती है। वहाँ उसका ससुर चौधरी उसके शरीर का आनंद लेना चाहता है और कई बार उस पर हमला करता है। इस प्रसंग में वह कहती है- "चौधरी मेरा ससुर... ससुर नहीं खसम बणना चाहवे था मेरा... मैंने विरोध करा तो मुझे मारा-पीटा गया। तरह-तरह के जुल्म किए... फिर भी मैंन्ने हार नी मानी तो निकाल बाहर किया"।[22]

जब उसने पति से ससुर की शिकायत की तो वह भी उल्टे कहने लगे - "मेरे बाप के खिलाफ एक भी लफ्ज बोल्ली तो हाड़-गोड़ तोड़ के धर दूंगा। जिंदगी बर लूली-लंगडी बणके खाट पे पड़ी रहेगी... औरत है तो औरत बण के रह"।[23]

जब बहू ने ससुर की बात नहीं मानी तो उसे मारपीट कर घर से निकाल दिया गया। चौधरी ने नौकर जगेसर को उसके मायके भेजने का आदेश दिया तो रास्ते में बहू जगेसर को अपनी पूरी कहानी बताती है। जगेसर चौधरी से नाराज़ हो जाता है और अपनी बहू की मदद करने के लिए उत्सुक हो जाता है। वह बहू को उसके माता-पिता के घर ले जाने के बजाय अपने साथ लाने के लिए सहमत हो जाता है।

इस कहानी में चौधरी के बेटे बिरम की पत्नी का चित्रण ऐसे किया गया है जो उच्च वर्गीय समाज की सदस्य होते हुए भी दलितों की श्रेणी में आती है। क्योंकि अपने ही

परिवार में उसे दबाया गया है। यहां वाल्मिकी ने बिरजू की अभागी बहू का दर्दनाक चित्रण किया है, जिसके लिए मायके और ससुराल कोई मायने नहीं रखते। जिन अधिकारों के तहत पुरुषों को अनगिनत सुविधाएँ प्राप्त हैं, महिलाओं को मनमाने ढंग से उन्हीं सुविधाओं का उपभोग करना पड़ता है। इस कहानी में भावपूर्ण तथा मानवीय संवेदना को जागृत करनेवाली स्थिति दृष्टिगोचर होती है।

2.27 कर का मनका डारिके - सुवर्णा महेसकर

हेमलता महिश्वर जी **की 'कर का मनका डारिके'** कहानी में समाज में व्याप्त जाति-भेद पर आधारित घृणा को दर्शाती है। सुवर्णा महेस्कर एक शिक्षित, होशियारी और किसी भी समस्या पर अच्छे ढ़ग से भाषण करने वाली महिला है। उसे अपने आप में विश्वास एवं आत्मनिर्भरता है। सुवर्णा महेस्कर परिवार परामर्श केंद्र में एक कार्यशाला में भाग लेती है। वहां से वह अन्य महिला सलाहकारों से अलग भाषण देते हुए सबका आकर्षण पाती है। फिर जैसे ही उन्हें उसकी जाति के बारे में पता चलता है तो वे उससे नफरत करने लगते हैं। वे पूरे कार्यशाला में उसकी उपेक्षा करते हैं। यहाँ पर हेमलता महिश्वर स्त्री विमर्श के प्रश्नों और स्त्री-सशक्तीकरण जैसे मुद्दों में दलित स्त्री के प्रश्नों की साझेदारी पर संवेदना जगाती है। कहानी इस ओर भी ध्यान दिलाती है कि शिक्षित और स्त्री विमर्श से जुडी ग़ैर-दलित स्त्रियाँ दलित समाज से आज भी दूरी बनाये हुए हैं।

2.28 त्रिशूल - रेणु, पार्वती

सुशीला टाकभौरे जी की 'त्रिशूल' कहानी एक मनोवैज्ञानिक एवं स्वप्निल शैली में लिखी गई कहानी है। रेणु अपने पति और बच्चों के साथ रहती है। फिर एक दृष्टि से वह अपने पुराने प्रेमी को शिव के रूप में और अपने को पार्वती के शकल में देखती है। शादी से पहले रेनू का एक प्रेमी था, जो उसके सपने में शिव के रूप में आता है। रेणु की तरह आज भी कई लड़कियां जिंदगी के सफर में अपना खोया हुआ प्यार ढूंढती हैं। यहाँ रेणु आधे-अधूरे

प्रेम का प्रतीक हैं। रेणु के माध्यम से घर में बंधी एक गृहिणी के मानसिक संघर्ष को भी दिखाया गया है। शादीशुदा जिंदगी में महिलाएँ खुद को खो देती हैं और अपनी पहचान भूल जाती हैं। वह अपना जीवन दूसरों के लिए जीती है और उनमें अपनी खुशी ढूंढती है। तभी उसे मन ही मन अपने पुराने प्रेमी की याद आती है। कहीं न कहीं सभी महिलाएँ बच्चे या पति सभी से प्यार चाहते हैं। रेणु उन महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो अपने पति और बच्चों के लिए काम करती हैं और घर पर रहती हैं। वे उनसे केवल प्यार और सम्मान चाहती हैं। रेणु के द्वारा इसमें एक स्त्री के दर्द और बेबसी को दिखाया गया है।

2.29 अरथी - गंगादेई

पूरन सिंह की कहानी ' अरथी ' एक बूढ़ी माँ के दुःख को दर्शाती है जो दो शिक्षित बच्चों के बावजूद भी वह अनाथों की तरह रहती है। गंगादेई और अपने पति बद्री दोनों बच्चों के पालन-पोषण के लिए दिन-रात मेहनत करते थे। लेकिन जब दोनों बड़े होकर शहर चले गए तो उन्होंने शादी कर ली और नाम बदलकर वहीं बस गए। बद्री एक मेहनती पिता का मजबूत और मेहनती बेटा था। गंगादेई और बद्री के पिता के बीच रिश्ता उतना ही गहरा था जितना बद्री और उसके पिता के बीच था। बद्री को अपने पिता से इतना गहरा प्यार था जो बद्री और उसके बच्चों के बीच नहीं था। बद्री ने पूरा जीवन अपनी कमाई बच्चों को पढ़ने के लिए दिया। लेकिन बच्चे जब बड़े हुए तो अपने आप दूर हो गए। उसने अपने पति के बीमार होने पर भी अपने बच्चों से मदद नहीं मांगी। क्योंकि जब उसने उन्हें उसकी बीमारी के बारे में बताया तो वे खुद नहीं आए, बल्कि बदले में पैसे भेजे। इसलिए उसने वह पैसे वापस भेजे और खुद काम करके अपने पति की देखभाल की। गंगादेई बुढ़ापे में भी आत्मसम्मान नहीं खोना चाहती थी। उसने अपने पति की देखभाल खुद की। साथ ही, जब उसके पति की मृत्यु हुई, तो उसने बच्चों को अंतिम संस्कार करने से रोक दिया और खुद ही अंतिम संस्कार किया। यह कहते हुए कि जब वह जीवित था, तब वे नहीं आए, इसलिए

अब भी उसे बच्चों की आवश्यकता नहीं है, गंगादेई पारंपरिक रीति-रिवाजों को तोड़ती है और अपने आदर्शों पर कायम रहती है।

2.30 चरिता चरिता -

नामदेव जी की कहानी 'चरिता' में पितृसत्ता और स्त्री के प्रति पुरुष की अधीनता को दर्शाया गया है। चमरौटी में कच्चे-पक्के मकानों की कतार में बने एक अधबने मकान में रहने वाले निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में चरिता आठ भाई-बहनों में सबसे छोटी थी। परिवार के संस्कार ऐसे थे कि जब वह आठवीं कक्षा में थी, तभी उसके लिए शादी के प्रस्ताव आने लगे थे। उसके भाई और भाभी उस पर शादी का दबाव बना रहे थे। लेकिन चरिता को अपनी पढ़ाई पर भरोसा था और उसने आगे की पढ़ाई के लिए परिवार से लड़ाई लड़ी। आखिरकार उसके घरवालों ने उसकी शादी नील से करवा दी। शादी के बाद पति उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता है, और जहां भी संभव हो उसे अपमानित करने की कोशिश करता है। फिर भी, चरिता अपने ज्ञान का उपयोग करके अपने समाज के लिए काम करती थी। वह एक संस्कार स्त्री की तरह अपने पति का आदर भी करती है और एक आदर्शवादी स्त्री की तरह जीवन भी बिताती है।

2.31 सरोगेट मदर फूलमती -

रजत रानी मीनू की कहानी 'सरोगेट मदर' एक दलित महिला की दुर्दशा को दर्शाती है जिसने जाति और गरीबी के कारण अपने अधिकार खो दिए हैं। चंदा की माँ फूलमती अमीर लोगों के बच्चों को जन्म देने के लिए अपनी कोख का उपयोग करती है और वह उन बच्चों के लिए सरोगेट माँ बन जाती है। बदले में उसे कुछ पैसे मिलते हैं। असल जिंदगी में, जब उसकी बेटी चंदा गर्भधारण करने में असमर्थ होती है, तो फूलमती डॉक्टरों से सरोगेसी करने के लिए कहती है। लेकिन डॉक्टर उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं देते हैं और कहते हैं कि यह सब सिर्फ अमीर लोग ही कर सकते हैं, तुम इतना खर्च वहन नहीं कर पाओगी, और

तुम अभी सरोगेट मां भी नहीं बन सकती। यह सब सुनकर फूलमती बहुत दुखी होती है। क्योंकि वह अपनी कोख का इस्तेमाल अमीर लोगों के लिए तो कर सकती थी लेकिन अपनी बेटी के लिए नहीं कर सकती थी। जब वह सरोगेट मां बन सकती थी, तब डॉक्टरों से उसे जो सम्मान और आदर मिलता था। उसने पूरे मन से चार बच्चों को जन्म दिया था। जिस अस्पताल के लिए उसने तन मन धन से काम किया, उसी अस्पताल ने उसे धोखा दिया। अस्पताल वालों ने उसे सरोगेट मदर बनने के लिए इतने पैसे नहीं दिए क्योंकि वह दलित थी, उसे सरोगेट मदर बनने की कीमत नहीं पता थी। लेकिन बदले में मिले अपमान ने उसे दुखी कर दिया और उसे एहसास हुआ कि यह समाज अमीर लोगों द्वारा चलाया जाता है, गरीब लोग तो उनके लिए गुड़िया ही हैं।

2.32 महू -प्रज्ञा

कैलाश वानखेड़े की कहानी 'महू' में शिक्षा के क्षेत्र में दलितों पर हो रहे अत्याचार का अच्छा चित्रण है। कहानी में नायिका प्रज्ञा एक दलित परिवार की पढने में होशियार लड़की है। प्रज्ञा को अपनी जाति के कारण कॉलेज में बहुत कष्ट सहना पड़ता है। कॉलेज के पहले ही दिन प्रोफ़ेसर पढ़ाते हुए कहते है - "शरीर में कोई अनावश्यक हड्डी बढ़ने लग जाती है तो उसका ऑपरेशन करना पड़ता है। समाज में भी ज़रूरी है। ज़रूरी है उन्हें आगे बढ़ने से रोका जाये, वरना वे पूरे समाज के लिए घातक होंगे। कैंसर की तरह"।[24] ऊंची जाति के दोस्तों से लेकर प्रोफेसरों तक, हर कोई निचली जाति का अपमान करता है। जाति के नाम से लोग मज़ाक में प्रज्ञा को अपमानित करने की कोशिश करते हैं, तो वह उसका मुंहतोड़ जवाब भी देती है।

जाती की मामलें में कॉलेज के छात्रावासों में अक्सर दलित छात्र आत्महत्या कर लेते हैं। पढ़ने आने वाले दलित बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते। इस पूरी घटना के पीछे

उच्च अधिकारियों का हाथ है। यह कहानी दलित युवाओं की सांस्थानिक हत्या बनाम आत्महत्या जैसे बेहद ज़रूरी मुद्दे की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है।

2.33 साक्षात्कार सुशीला टाकभौरे -

सुशीला टाकभौरे की कहानी **'साक्षात्कार'** शैक्षणिक संस्थानों में दलितों की स्थिति का यथार्थवादी चित्रण प्रदान करती है। इस में प्रतिभा नामक सुशिक्षित एवं कामकाजी स्त्री की समस्याओं से साक्षात्कार करती कहानी है। प्रतिभा नागपुर शहर में दलित पिछड़े वर्ग की एक बड़ी बस्ती बारा सिग्नल में रहती हैं। वह शिक्षित हैं और पिछले कुछ सालों से एक निजी स्कूल में शिक्षिका के तौर पर काम कर रही हैं। इसके साथ कुछ वर्षों से नागपुर शहर और नागपुर जिला स्तर पर सामाजिक जागृति का कार्य कर रही थी। अब वह महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि अखिल भारतीय स्तर पर सामाजिक क्षेत्र में लगातार काम कर रही हैं। वह महिलाओं की प्रगति की प्रबल समर्थक हैं, वह चाहती हैं कि समाज लैंगिक समानता को स्वीकार करे। महिलाओं के सुप्त आत्मविश्वास को जगाने और उनकी अस्मिता को पहचानने के लिए प्रेरणा के रूप में उन्होंने कई कार्यक्रमों में अपने विचार साझा किए।

'लोकवाणी समाचार' के पत्रकार उमाकान्त जी साक्षात्कार लेने प्रतिभा जी के घर आते है। उमाकांत जी से बातचीत से प्रतिभा को खुद पता चला कि उनका जीवन उनके परिवार, बच्चों और पति से ही जुड़ा हुआ है। जब उमाकांत जी ने उनसे पूछा कि उनका सबसे अच्छा दोस्त कौन है, तो उनका जवाब था कि मेरे पति ही मेरे दोस्त हैं। उमाकांत उससे जो भी सवाल पूछते हैं, उसका जवाब परिवार से ही जुडा रहता है। उनके छह बच्चे बातचीत के बीच में उन्हें काम के लिए बुला रहे थे तो घर के काम-काज निपटाने के बाद ही वह इंटरव्यू दे पाईं। आखिर में उमाकांत जी ने उससे उसके घर का पता पूछा। प्रतिभा अपने घर का पता भी भूल गई। वह तुरंत उठकर घर का दरवाजा ढूंढने लगी, तभी उमाकांत जी ने उससे फिर पूछा तो प्रतिभा ने परेशानी के साथ बोली -"मैं अपने घर का

पता ढूँढ रही हूँ.."।[25] वह दलित आंदोलन के लिए काम करती हैं, फिर भी परिवार द्वारा उन्हें हर तरफ से सीमित रखा जाता है। लोग महिलाओं की आज़ादी की बात करते हैं लेकिन स्त्रियाँ अपने आप में बंद रहती हैं। कहीं न कहीं वो बच्चों और पति के बंधन में डूब जाती और खुद को खो देती हैं। इस तरह यह कहानी एक स्त्री के घर और बाहर के जीवन के बीच संतुलन को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

2.34 छौआ माँ -छौआ माँ

सुशीला जी की कहानी **'छौआ माँ'** में दाई को एक आदर्श चरित्र वाली महिला के रूप में दर्शाया गया है। छौआ माँ साठ साल की महिला है। वह अपने गाँव में दाई का काम संभालती है। डॉक्टरों ने छौआ माँ को इस काम के लिए दाई का सर्टिफिकेट भी दिया है और वह हमेशा खुद पर गर्व महसूस करती हैं। इसके साथ ही वह पूरे घर की सफाई और अन्य काम भी करती हैं। वह इस काम के लिए ऊंची जाति के लोगों के घर के अंदर भी जा सकती है। लेकिन काम हो जाने के बाद उसका स्थान घर के बाहर होता है। अगर बच्चा लड़की हो तो उसे कम पैसे मिलते हैं और अगर बच्चा लड़का हो तो उसे ज्यादा पैसे मिलते हैं। अपनी बेटी को दाई का काम पसंद नहीं है, वह इस काम को नफ़रत करती है। एक दिन जब वह कुछ खरीदने के लिए तहसील जाती है, तो देर हो जाने के कारण वह घर वापस नहीं आ पाती, इसलिए वह उस दिन एक रिश्तेदार के घर रुक जाती है। लेकिन उसी दिन गाँव मां की अनुपस्थिति में उच्च वर्ग के लोग बेटी तुलसी को दाई का काम करने के लिए मज़बूर कर देते हैं। जब ऊंची जाति के लोग जोर देते हैं तो उसे मजबूरन ये काम करना पड़ता है। जब छौआ माँ को यह पता चला तो दाई का काम छोड़ने की फैसला लेती इस कहानी से यह स्पष्ट है कि दलित महिला अपने बच्चों को उनके पारंपरिक काम से मुक्त कराना चाहती है।

2.35 मेरा समाज सुशीला टाकभौरे -

'मेरा समाज' कहानी में सुशीला टाकभौरे ने समाज के भ्रष्टाचार का जिक्र किया है। इस कहानी में धर्म, कर्म, अंधविश्वास, कम उम्र में लड़कियों की शादी जैसी सामाजिक कुप्रथाओं ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। डायरी शैली में लिखी गई इस कहानी में लेखिका अपनी निजी जीवन के अनुभवों को याद कर रही हैं। दलित महिलाओं का अपने ही समाज में दलित पुरुषों द्वारा शोषण किया जाता है। उन्हें मारना-पीटना और घर से निकाल देना आम बात रही है।

"पति दुश्मन जैसा मारता, पत्नी रोती रहती, फिर भी घर का पूरा काम करती, खाना बनाकर सबको खिलाती, कभी थोड़ा स्वयं भी खा लेती नहीं तो भूखी ही रह जाती" ।[26] वह अपने अच्छे दिनों का इंतजार करती है। लेकिन उसकी पूरी जिंदगी इसी इंतजार में गुजर जाती है।

दलित समाज में लड़कियों की शादी 14-15 साल की उम्र में कर दी जाती है। बेटी के जन्म लेते ही उसकी पढ़ाई की नहीं बल्कि शादी की चिंता होने लगती है। कहानी में लेखिका की माँ के निकट सम्बन्धी और रिश्तेदार कहते हैं- "कब तक लड़की को पढ़ाते रहोगे? कब तक उसे बैठाकर रखोगे? ऐसे तो लड़की बूढ़ी हो जायेगी"।[27] दलित समाज में विवाह और बच्चे ही जीवन का लक्ष्य हैं। इस तरह से समाज आगे नहीं बढ़ सकता। इस पारंपरिक विचारधारा को तोड़ना जरूरी है। तभी समाज नए विचारों को अपना पाएगा। यहाँ लेखिका का संदेश यह है कि समाज की मासूम बालिकाओं को बचपन से ही शिक्षा के प्रति उत्सुक और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि वे आगे बढ़ सकें।

2.36 बदला सुशीला टाकभौरे -

सुशीला टाकभौरे ने अपनी कहानी **'बदला'** में जातिवाद, सामाजिक असमानता, छुआछूत, भेदभाव आदि पर कठोर व्यंग्य किया गया है। दलित जाती की छौआ मां ने जब

सवर्ण स्त्रियों के साथ होली मनाई, तब से छौआ मां के मन में उन सभी महिलाओं के प्रति प्रेम और आत्मीयता की भावना पैदा हो गई। लेकिन वे महिलाएं अपने पोते कल्लू के खिलाफ अभद्र भाषा का प्रयोग करती हैं तो उसको को गुस्सा आ जाती है। यह घटना ऐसी होती है कि- एक दिन, जब कल्लू स्कूल से लौट रहा था, तो ऊंची जाति के लोगों ने उसे घेर लिया और लाठियों से उसकी पिटाई की। यह सुनते ही कल्लू के पिता और उसके समुदाय के सभी लोग इकट्ठा हो गए और लाठी लेकर ऊंची जाति के लोगों का सामना करने निकल पड़े। छौआ माँ एक योद्धा महिला का रूप धारण कर कहती है, "अब हम किसीसे नहीं डरेंगे। हम भी ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। वे शेर है तो हम सवाशेर बनकर रहेंगे"।[28] छौआ माँ के फैसले से पूरे समाज को और भी ताकत मिलती है। सभी में आत्मविश्वास जाग उठा। गाँव के लोगों की एकता देखकर सभी ऊंची जाति के लोग डर गए और वहाँ से भाग गए। पूरे गाँव में एक सामाजिक क्रांति आ गई। यहाँ ऐसी सच्चाई की ओर इशारा किया है। अगर दलित लोग एकजुट रहेंगे, तो गाँव में पूँजीवादी लोगों द्वारा किया जाने वाला शोषण खत्म हो जाएगा और साथ ही दलित भी बिना किसी डर के ऊंची जाति के लोगों की तरह स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जी सकेंगे। यह कहानी समाज में जातिगत भेदभाव के खिलाफ खुला विद्रोह दिखाती है और इससे मुक्ति का रास्ता प्रदान करती है।

2.37 नालियाँ -नवीता

वंदना जी की कहानी 'नालियां' में मुख्य पात्र नविता और उसके परिवार के पूँजीवादी के साथ संघर्ष का चित्रण नज़र आ रहा है। यह कहानी बताती है कि कैसे एक लड़की के सपने दलित होने के कारण चकनाचूर हो जाते हैं। नविता दिल्ली की एक मशहूर विश्वविद्यालय में रिसर्च स्कॉलर हैं। बारिश के दौरान गाँव में उसके कच्चे घर की हालत बहुत खराब हो जाती है। उसकी माँ और भाई उसे कुछ नहीं कहते कि कहीं वह परेशान न हो जाये। लेकिन नवीता ने सब कुछ समझने के बाद अपने कुछ पैसों से एक अच्छा घर बनाने की तैयारी करती है। उन्हें सीमित संसाधनों में ही घर पूरा करना था। नविता अपनी

माँ और भाई के साथ मज़दूरों का काम करते हुए घर बना लेते है मगर उसके घर की नाली निकलने की मुख्य समस्या है। सभी ने तय किया कि दीवार के पीछे जो सरकारी लाइन जा रही है, उसी से नाली निकाली जाएगी। लेकिन यह सब देखकर जोगेश्वरी दुबे की बेटी रानी अपने भतीजे के साथ लगातार गाली-गलौज करने लगी "ई दिन आय गवा कि लौहार-फौहारे के हिंआ का गन्दा पानी हमरे वारी के बहि"।[29] लेकिन सभी ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि यह गंदा पानी जमीन के अंदर सरकारी नाले के अंदर जाएगा। लेकिन उसने नहीं माना। काफी देर तक चली बहस के बाद नविता को समझ में आया कि सारी लड़ाई गरीबों के पक्के मकान के निर्माण को लेकर है। नविता का पक्के घर में रहने का स्वप्न भरभरा कर गिर जाता है। गाँव की रीति-रिवाज़ों के कारण वह अपनी आधुनिक सोच को सामने नहीं रख पा रही है। इस तरह यह कहानी समाज की जातिवादी विचारधारा का नंगा चेहरा दिखाती है।

2.38 उमा चली गयी दिल्ली -उमा

डॉ. सुनीता देवी की कहानी 'उमा चली गयी दिल्ली' में नारीत्व के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गयी है। प्रस्तुत कहानी में उमा को ऊंची जाति के एक लड़के से प्रेम हो जाता है और वह घर छोड़कर भाग जाती है। लेकिन लड़के ने जब उसे एक होटल के कमरे में ले जाता है तो उमा को उसके धोखे का एहसास हो गयी और वह वहां से भाग निकली। इस घटना के तुरंत बाद उसके परिवार वालों ने उसकी शादी तय कर दी। न तो उन्होंने शादी के लिए उससे इजाजत मांगी और न ही शादी से पहले वह लड़के से मिली। उसकी सहेली सरिता ने उमा के घरवालों से उसे लड़के से मिलवाने की कई बार बात की। उमा के घरवालों ने सरिता की हर बात को नकार दिया। एक लड़के से प्यार करने के अपराध की वजह से उमा को अपनी शादी की बात करने का कोई हक नहीं था। कहानी के अंत में उमा की शादी टूट जाती है क्योंकि शादी के बाद लड़का दूसरी औरत के साथ भाग जाता है। इस घटना की वजह से उमा के घरवालों को अपनी बेटी पर हुए अत्याचारों का पछतावा होता है

और वे उसे पढ़ाई के लिए सरिता के साथ दिल्ली भेज देते हैं। यहां पहले उमा को कोई स्वतंत्रता नहीं थी, लेकिन शादी टूटने के बाद उसके माता-पिता ने उसे अपनी गलती सुधारने के लिए अपनी इच्छानुसार जीने की अनुमति दे दी। कहानी दलित लड़कियों के प्रति ऊंची जाति के लोगों की मानसिकता और दलित लड़कियों के परिवारों द्वारा उनकी उपेक्षा को दर्शाती है।

2.39 हम कौन है - अज्जु

रजत रानी मीनू जी की 'हम कौन हैं' संवादात्मक शैली में लिखी गई कहानी है जिसमें एक दलित लड़की और उसकी मां के बीच वार्तालाप की ओर इशारा किया गया है। धनेश्वर और उमा अपनी छोटी बेटी अजातिका को मोटी फीस देकर लोअर किंडरगार्टन (एलकेजी) कक्षा में दाखिला दिलाते हैं। कुछ दिनों बाद जब क्लास टीचर अजातिका से उसका सरनेम पूछती है तो वह परेशान हो जाती है। उस मासूम बच्ची को नहीं पता कि सरनेम क्या होता है। अजातिका घर पर अपनी मां से सलाह पूछती है कि गुप्ता मैडम बार-बार सरनेम पूछ रही हैं। तो माँ ने बताया - "बेटा, जब मैडम पूछे तो कहना - हम सरनेम नहीं लगाते"।[30]

बाद में फिर से अज्जु माँ से पूछती है कि- "मम्मी , फिर मेरा सरनेम क्या है? आपने सरनेम क्यों नहीं लगाया, बताओ न? वालिंयटर दीदी कह रही थीं, 'जो सरनेम नहीं लगाते वह नीचि जाति के होते है'। जाती क्या होती है मम्मी? हमारा सरनेम क्या है?...हम कौन है मम्मी?"।[31]

इस प्रकार का संभाषण निश्चित तौर पर दलित परिवारों की समस्या है। ऐसी बातचीत किसी ब्राह्मण या द्विज के घर में नहीं हो सकती। वहां बच्चों को बचपन से ही सिखाया जाता है कि कौन ऊंची जाति का है और कौन नीची जाति का। भारत का शासक वर्ग एक द्विआधारी वर्ग है जो पूंजीवाद और पश्चिमी संस्कृति के विकास के साथ भी दलित

जातियों को सामाजिक दर्जा देना नहीं भूला है। कहानी में बहुत ही मार्मिक ढंग से दर्शाया गया है कि इक्कीसवीं सदी में भी भारतीय समाज के मानस में 'जाति' कितनी गहराई तक समाई हुई है।

2.40 बदबू - संतोष

सूरजपाल चौहान की 'बदबू' कहानी भंगी समुदाय की दुर्दशा को प्रस्तुत करती है। इस कहानी की नायिका संतोष है जो अपने समुदाय की सभी लड़कियों से अधिक पढ़ी-लिखी है और उसकी शादी एक नौवीं पास लड़के से हुई है। उसकी सास शौचालय साफ करने का काम करती है। शादी के ठीक दस-पंद्रह दिन बाद उसकी सास उसे शौचालय साफ करने के लिए भेज देती है। पढ़ी-लिखी संतोष अपनी सास के साथ शौचालय साफ करने नहीं जाना चाहती थी, लेकिन पति के दबाव के कारण उसे न चाहते हुए भी सास के साथ शौचालय साफ करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। वह अपने पेशे और पुश्तैनी पृष्ठभूमि के कारण गंदगी साफ करने के खिलाफ है। अचानक उसका भाई उससे मिलने आया, इसलिए उसके ससुराल वालों ने घर को सजाया और खाना भी अच्छे से बनाया। लेखक ने इस आंतरिक द्वंद्व का चित्रण इस प्रकार किया है- "भइया सन्तोष को देखकर मन्द मन्द मुस्कुरा रहे थे- यह सोचकर कि उसकी बहन सुसराल में खाने-पीने के मामले में तनिक भी दुःखी नहीं है। भला दुःखी भी क्यों होगी ? जिसके घर में इतने प्रकार की सब्जियाँ एक साथ बनती हों, उसके क्या कहने! अब संतोष पति और सास के सामने कैसे बताये कि यह सब वह और उसकी सास मोहल्ले के पाखाने साफ करने के बदले जुटाकर लायी हैं। बस, वह उस समय मौन - व्रत धारण करके रह गयी"।[32]

संतोष अपने भाई को यह नहीं बता सकी कि जो खाना वह बड़े मजे से खा रहा था वह उसके घर में बना खाना नहीं था बल्कि शौचालय साफ करने के बदले में मिला था। वह उसे सब कुछ बताना चाहती थी लेकिन अपनी सास और पति के कारण कुछ कह नहीं पा

रही थी। कहानी इस बहस को दिशा देती है कि भंगी समुदाय की युवा पीढ़ी में पुश्तैनी और गंदी संपत्ति के खिलाफ विरोध के स्वर उठ रहे हैं। शिक्षित पीढ़ी गंदे पुश्तैनी धंधे से छुटकारा पाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

2.41 पगड़ी-सरबतिया

जयप्रकाश कर्दम जी ने 'पगड़ी' कहानी में स्त्री के कर्तव्य, धैर्य, साहस और बुद्धि जैसे गुणों का आन्तरिक सौन्दर्य का उल्लेख किया है। इस कहानी के स्त्री पात्र सरबतिया का पति राम सिंह शराबी व निठल्ला था। वह अपने परिवार का भरम-पोषण करती है तथा बेटे के सगाई-ब्याह की भी जिम्मेदारी स्वयं निभाती है। रीति-रिवाज के अनुसार पगड़ी घर के मुखिया को पहनायी जाती है लेकिन घर के मुखिया का काम तो सरबतिया करती थी अतः यह चिंतन का विषय बन गया कि पगड़ी किसे पहनाई जाए। यह विषय उसकी खुशी में खलल डाल थी। वह अपने भीतर दो विचारों से जूझ रही थी कि वह घर की जिम्मेदारियों का वहन कर रही है किंतु मुखिया तो घर का मर्द ही होता है । अंत में पंचों द्वारा सरबतिया को पगड़ी पहनाकर एक ऐतिहासिक निर्णय लिया जाता है। यहाँ दलित स्त्री की ज़िम्मेदारियों को साझा करने के साथ ही समाज में उसके हिस्सेदारी के प्रश्नों को भी बख़ूभी व्यक्त करती है। दलित स्त्री घर के भीतर पितृसत्ता की संरचनाओं से जूझते हुए कठिन परिश्रम और संघर्ष करती है। साथ ही यह दिखाने की कोशिश भी करती है कि अगर समाज साथ दे तो किसी भी जाति की महिला को उसका अधिकार और सम्मान मिल सकता है। 'पगड़ी' प्रतीक है, परिवार-समाज में हिस्सेदारी और सम्मान की।

निष्कर्ष

दलित कहानियां मुख्यधारा के साहित्य और समाज के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति के साथ-साथ, जाति से आहत और पीड़ित समाज के अपमानजनक परिस्थितियों से गुजरने और उसके अंतहीन संघर्ष की भी कहानियां हैं। दलित समाज और दलित समाज की स्त्रियों

ने असहनीय पीड़ा, कष्ट, उपेक्षा और अपमान सहा है। दलित स्त्रियों का शोषण दलित पुरुषों के साथ-साथ उच्च जातियों द्वारा भी किया जाता रहा है। दलित जीवन जीने वाली स्त्रियाँ धनाभाव और गरीबी से जूझते हुए अपनी आजीविका और अपने परिवार का संचालन करती रही हैं। दलित कहानी की शुरुआत में दलित महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं होती हैं और अंत में एक कमज़ोर दलित महिला को मज़बूत दिखाया जाता है। कहानियों में चित्रित महिलाओं की समस्याएँ और परेशानियाँ कभी एक जैसी नहीं होतीं। पारिवारिक, आर्थिक और कामकाजी क्षेत्रों में उनकी समस्याएँ अलग-अलग होती हैं। कहानियों में महिला पात्रों की अपनी पहचान है। वे आदर्शवादी विचारकों से प्रभावित हैं। महिलाओं के उत्थान के लिए न केवल महिलाएं बल्कि पुरुष भी समान रूप से काम कर रहे हैं। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि उपरोक्त सभी कहानियों में दलित स्त्रियों के विभिन्न समस्याओं और व्यथाओं देखने को मिलते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अजय नावरिया, इज्ज़त, पृ.158, रजत रानी मीनू, दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियाँ, वाणी प्रकाशन
2. अजय नावरिया, इज्ज़त, पृ.159, रजत रानी मीनू, दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियाँ, वाणी प्रकाशन
3. कावेरी, सुमंगली, पृ.117, गुप्ता, रमणिका, दलित कहानी संचयन, प्रथम संस्करण-2003, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
4. कावेरी, सुमंगली, पृ.117, गुप्ता, रमणिका, दलित कहानी संचयन, प्रथम संस्करण-2003, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
5. कावेरी, सुमंगली, पृ.119, गुप्ता, रमणिका, दलित कहानी संचयन, प्रथम संस्करण-2003, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
6. कावेरी, सुमंगली, पृ.119, गुप्ता, रमणिका, दलित कहानी संचयन, प्रथम संस्करण-2003, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
7. कावेरी, सुमंगली, पृ.119, गुप्ता, रमणिका, दलित कहानी संचयन, प्रथम संस्करण-2003, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
8. वियोगी, कुसुम, अन्तिम बयान, पृ.141, गुप्ता, रमणिका, दलित कहानी संचयन, प्रथम संस्करण-2003, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित
9. टेकचन्द, ए.टी.एम, पृ.237, रजत रानी मीनू, दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन
10. विपिन बिहारी, बोझ मुक्त, पृष्ठ -16
11. विपिन बिहारी, बोझ मुक्त, पृष्ठ -102
12. दीपा, जीत, पृ.287, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

13.पवार, कौशल, हार गयी ज़िदगी. पृ.222, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

14. पवार, कौशल, हार गयी ज़िदगी. पृ.224, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

15. मीनू, रजत रानी, सुनीता, पृ.30, हम कौन हैं, प्रथम संस्करण-2012, वाणी प्रकाशन

16. मीनू, रजत रानी, सुनीता, पृ.29, हम कौन हैं, प्रथम संस्करण-2012, वाणी प्रकाशन

17. सुशीला टाकभौरे, टूटता वहम, पृ.143, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

18. सुशीला टाकभौरे, सिलिया, पृष्ठ. 47-48, कथारंग संपूर्ण कहानियाँ प्रथम संस्करण 2022, प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

19. रजनी दिसोदिया, छोटी बहू, पृ.175, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

20. रजनी दिसोदिया, छोटी बहू, पृ.175, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

21.मीणा, हरिराम, अमली, पृ.95, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

22. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, सलाम (जिनावर कहानी से), पृ.99

23. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, सलाम (जिनावर कहानी से), पृ.99

24.वानखेड़े, कैलाश, महू, पृ.107, मीनू, रज तरानी, दलित स्त्री केन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

25. टाकभैरे, सुशीला, साक्षात्कार, पृष्ठ.300, कथारंग संपूर्ण कहानियाँ,प्रथं संस्करण-2022, प्रलेक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

26.सुशीला टाकभौरे, मेरा समाज, पृष्ठ.129, रजत रानी मीनू, दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

27.सुशीला टाकभौरे, मेरा समाज, पृष्ठ.131, रजत रानी मीनू, दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

28.सुशीला टाकभौरे - संघर्ष, पृ. 63

29.वंदना, नालियाँ, पृष्ठ.284, रजत रानी मीनू, दलित स्त्री केंन्द्रित कहानियाँ, प्रथम संस्करण-2023, वाणी प्रकाशन

30.रजत रानी मीनू, हम कौन है, पृष्ठ-18, हम कौन है कहानी संग्रह, प्रथम संस्करण-2012, वाणी प्रकाशन

31.रजत रानी मीनू, हम कौन है, पृष्ठ-19, हम कौन है कहानी संग्रह, प्रथम संस्करण-2012, वाणी प्रकाशन

32.सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, वणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2009, पृ77